॥ श्रीः ॥

रामरसायन ।

गोलोकवासी रामभक्त कविवर
रसिकविहारी-कृत ।

जिसमें

सच्चिदानंद आनंदकंद जगवंद्य कोशलराज श्रीमन्महाराज
रामचंद्रजीकी सम्पूर्ण नरलीला सुखशीला हरिकथा-
मृताभिलाषियोंके पानार्थ विविध प्रकारके
मनहरण छन्दोंमें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीमान् महाराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजी की
आज्ञानुसार और सहायतासे,

कलिमलग्रसित मनुष्योंके उपकारार्थ

अत्यंत शुद्धता और स्वच्छता पूर्वक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया ।

वैशाख संवत् १९६४, शके १८२९.

प्रस्तावना.

महाशय काव्यानुरागियो ! इस नवीन काव्यशिरोमणि पदललित भावकूट ग्रन्थके अवलोकन करनेसे अवश्य अतुल प्रेम उत्पन्न होकर श्रीरामचंद्रजीकी भक्तिका प्रवाह हृदयमें विस्तृत होताहै. इसे श्रीमान् महाराजाधिराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजीकी सभास्थ कवियोंमें अग्रगण्य श्रीरामचंद्र कृपाधिकारी गोलोकवासी कविवर रसिकविहारीजीने समस्त प्राणियोंके भवसागर उत्तीर्णार्थ श्रीरघुनाथजीके जन्मकी मनोहर कथा, व्याहोत्सव, वनगमन, विपिनचरित्र, सुग्रीव मिलन, अंजनीनंदनका लंकागमन, बिभीषण आगमन, रावण-वध, राज्याभिषेक, रामाश्वमेध, सीतारामरासविलास इत्यादि कथाएँ मनोहर छंदोंमें वर्णन की हैं, उक्त कविने जो मनभावन रुचिउपजावन रामयश वर्णन किया है, वह समस्त प्रेमी जनोंके दृष्टिगोचर है.

आपका–विद्वज्जनकृपाकांक्षी–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–यन्त्रालयाध्यक्ष–मुंबई.

मया पुरा श्रुतं देव ऋषिभिर्बहुधोदितम् ॥
रघुनाथपदस्मारी नित्यं रुद्रः पिनाकधृक् ॥ ३ ॥
तत्सर्वं तु मृषा जातं शत्रुघ्नं प्रति युद्धचता ॥
पुष्कलो मे हतोः वीरः शत्रुघ्नोपि विमूर्छितः ॥ ४ ॥
इत्युक्तवंतं प्लवगं प्रोवाच स महेश्वरः ॥
धन्योसि वीरवर्य त्वं भवान्वदति नो मृषा ॥ ५ ॥
मत्स्वामी रामचंद्रो वै सुरासुरनमस्कृतः ॥
तदश्वमानयामास तद्रक्षार्थं मयागतम् ॥ ६ ॥
निवसामि पुर नित्यं तद्भक्त्यानुवशीकृतः ॥
यथा कथंचिद्भक्तोऽसौ रक्ष्यः स्वात्मा इति स्थितः ॥ ७ ॥
एवं वदति चंडीशे हनुमान्कुपितो भृशम् ॥
शिलामादाय कोपेन ताडयामास तद्रथम् ॥८॥ इत्यादि॥

चौ०—सुनि हनुमत करि क्रोध कराला।घालो गहि गिरि खंड विशाला॥
तिहि लागतहि सूत हय स्यंदन ❋ बचे शंभु तिहुँ भये निकंदन ४५
तब शंकर नंदी पर भ्राजे ❋ हनुमत बहुरि शैलहनि गाजे ॥
शंभु कपिहि वर शूल प्रहारा ❋सो गहि कीश भंजि महिडारा५६
पुनि हर कीशहि शक्ति प्रहारी ❋ तासु घात सो भयो दुखारी ॥
इहिविधि शंकर अरु हनुमाना ❋ उद्ध युद्धकर दुहुँ बलवाना४७॥
जौ लग कपि प्रहार कृत तरु गिरि ❋ भंजत शंभु कीश तौ लग भिरि॥
मर्दत शंकर दलहि कराला ❋हर सन्मुख पुनि होत उताला ४८
करते लरत शंभु ते वीरा ❋ दल पद पुच्छ दलै रणधीरा ॥
इमि किय उद्ध युद्ध बहु कीशा ❋ सगणभये विह्वल गौरीशा४९॥

प्र० ॥ रा० ॥ अ० ४४ ॥ श्लोक।

अत्यंतं विह्वलो जातो महेशानः प्रकोपनः ॥
क्षणेक्षणे प्रहारेण कुर्वत्तं विह्वलं भृशम् ॥ ९ ॥

दोहा—लखि हनुमतकी बुद्धिवर, भये प्रसन्न महेश ॥
कही वीर कपि याचहू, वर जो रुचै सुदेश ॥ ५० ॥

तब कपि भाषी और हौं, कछु न चहौं बरदान ॥
जो प्रसन्न तौ रक्षिये, मम दल सकल महान ॥ ५१ ॥
वायस गृद्ध शृगाल सुन, भूत प्रेत तब जोय ॥
मम दल घायल मृतक जे, तिनै भखै नहिं कोय ॥ ५२ ॥
हौ द्रोणाचल जायकै, वेगहि भेषज लाय ॥
करिहौं विरुज सजीव सब, रघुवर दल समुदाय ॥ ५३ ॥
चौ०-सुनि भाषी शिव जाहु उताला ❀ करिहौं सदल सकल प्रतिपाला॥
तब कपि उछलि व्योम पथ धाये ❀ द्रोण शैल ढिग वेगहि आये ५४॥
तहाँ इंद्रसेवक बलवाना ❀ भेषज ग्रहण हेत रण ठाना ॥
तिनहिं पराजय करि हनुमंता ❀ लै औषधि पुनि आय तुरंता ५५
दोहा-पुष्कल शिर धर जोरिकै, हिय धरि जीवन मूर ॥
राम ध्यान करिकै कही, सत्य प्रेम प्रण पूर ॥ ५६ ॥
जौ हौं मन वच कर्म ते, ध्याऊं राम अनन्य ॥
तौ ए होउ सजीव द्रुत, कर भेषज गुण धन्य ॥ ५७ ॥
यौं कहतहि पुष्कल उठे, ह्वै सजीव धनुधारि ॥
वीरभद्र दुरिगो कहाँ, भाषत चहूँ निहारि ॥ ५८ ॥
पुनि रिपुहन ढिग जायकै, धरि औषधि तिन हीय ॥
सियाराम पद सुमिरि कपि, बोले वच रमणीय ॥ ५९ ॥
ब्रह्मचर्य व्रत सत्य मम, जो आजन्म प्रयंत ॥
जिय सचेत तौ होयँगे, याही समय तुरंत ॥ ६० ॥
यौं भाषतही शत्रुहन, उठि बैठे सर साजि ॥
इत उत हेरत कहत हैं, गये शंभु कहँ भाजि ॥ ६१ ॥
पुनि हनुमत चहुँ धायकै, भेषज कियो उताल ॥
धाये विरुज सजीव सब, नर निश्चर कपि भाल ॥ ६२ ॥
पुनि शिव दल अरु रामदल, भिरे भयो बहु घोष ॥
अति उद्धत युद्धत सुभट, कटत अटत सह रोष ॥ ६३ ॥

चौ०-ताछिन ह्वै सचेत धनु साजा ❀ धायो सदल वीरमणि राजा ॥
अस्त्र शस्त्र शिव नृप रिपु शाला ❀ हनैं परस्पर विशिख कराल६४
तब ब्रह्मास्त्र वीरमणि घाला ❀ सो विलोकि शत्रुघ्न उताला ॥
अस्त्र योगिनी दत्त विशाला ❀ योजित करि शर हनो कराल६५
ब्रह्म अस्त्रको मर्दि सु तीरा ❀ मूर्छित कियो सदल नृप वीरा ॥
ताछिन एक शंभु बिनु जेते ❀ गिरे भूत नरगण सब तेते ॥६६॥
तब लखि पुनि क्रोधित शिव धाये ❀ अस्त्रन मारि वीर बिचलाये ॥
रिपुहन भये कंठगत प्राणा ❀ विह्वल हनुमतादि बलवाना ६७॥

दोहा-ताछिन रिपुहन विकल ह्वै, बोले वचन अधीर ॥
हाय नाथ हा भ्रात मम, पाहि पाहि रघुवीर ॥ ६८ ॥
यौं भाषतही वेगि अति, प्रगट भये श्रीराम ॥
यज्ञ साज साजे सकल, श्याम अंग छबि धाम ॥ ६९ ॥
दरशतही रघुचंदके, सबही भये अनंद ॥
त्राहि त्राहि कहि पद गहे, धाय धाय जन वृंद ॥ ७० ॥
शंभु धाय कीनी बिनै, कही क्षमिय अपराध ॥
सुनि रघुवर उर लायकै, बोले कृपा अगाध ॥ ७१ ॥
हौं प्रसन्न राखो भलो, भक्तपाल वर धर्म ॥
रंच विलग मानौं नहीं, मम तव हितहै पर्म ॥ ७२ ॥
मम तव भक्त सु एक है, मम तव हित इक आय ॥
पावैं नरक निवास जो, मम तव भेद कराय ॥ ७३ ॥

प० रा० अ० ॥ ४६ ॥ श्लोक ॥

मया बह्वपकारा यत् कृतं कर्म तव स्फुटम् ॥
क्षम्यतां तत्कृपालो हि भवतोप्यभिधायकम् ॥ १० ॥
इति वाक्यं समाकर्ण्य महेशस्य रघूत्तमः ॥
उवाच धीरया वाचा कृपया पूर्णलोचनः ॥ ११ ॥
ममासि हृदये शर्व भवतो हृदये त्वहम् ॥
आवयोरंतरं नास्ति मूढाः पश्यन्ति दुर्धियः ॥ १२ ॥
ये भेदं विदधात्यद्धा आवयोरेकरूपयोः ॥

कुंभीपाकेषु पच्यन्ते नराः कल्पसहस्रकम् ॥ १३ ॥
ये त्वद्भक्तास्त एवासन्मद्भक्ता धर्मसंयुक्ताः ॥
मद्भक्ता अपि भूयः स्युर्भक्ता स्तव नतिकराः॥१४॥इत्यादि ॥

चौ०इमि दुहुँ राम शंभुआनँदभर ❀ मिले समर महि मध्य परस्पर॥
पुनि रघुवीर उताल सिधाये ❀ सदल नृपहि निज कर परशाये७४
विरुज सजीव वीरमणि राजा ❀ उठो उताल समेत समाजा ॥
सकुल भूप जोरे युग हाथा ❀ विनय करी प्रभुपद धरि माथा७५
रिपुहन हनुमतादि जे वीरा ❀ सबहि मिले नृप सकुल सु धीरा॥
पुनि नृपराज साज बहु साजी ❀ प्रभुहि समर्पो युत मख वाजी७६
ताछिन रघुवर अंतरध्याना ❀ भये भेद कछु कोउ न जाना ॥
जै जै राम सबै उच्चारा ❀ दुहुँदिशि भयो अनंद अपारा ७७

सो०–सदल वीरमणि भूप, चले शत्रुहन संग मुद ॥
यज्ञ तुरंग अनूप, इमि विचरत इच्छित चहूँ ॥ ७८ ॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० वि० वीरमणियुद्ध
वर्णनो नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

दोहा–इमि विचरत मख वाजिवर, इक अरण्य मधि आय ॥
पंथ चलत औचकरुपे, भूमि अश्व चहुँ पाय ॥ १ ॥
अचल भयो हरि चलत नाहिं, कीनेहुँ कसा प्रहार ॥
पुनि हनुमानादिक सुभट, गहि उठाय रह हार ॥ २ ॥
तहाँ बिजन वन माहिं चहुँ, जन धाये अकुलाय ॥
दूरि गहन कानन विषे, शौनक आश्रम पाय ॥ ३ ॥
जाय शत्रुहन शीशनामि, कही सुगति अति दीन ॥
सादर मुनि प्रभु बंधु तें, कथा सुवर्णन कीन ॥ ४ ॥
पुनि बोले हे राजसुत, जहँ हय रुपो पवित्र ॥
तहाँ सविधि होवै कथन, सीताराम चरित्र ॥ ५ ॥
तौ हय पद मोचै तुरत, सुनि रिपुहन शिरनाय ॥
गये तहाँ हनुमत सविधि, कहो राम यश गाय ॥ ६ ॥

छूटे पाय तुरंगके, हरषाने रिपुशाल ॥
गमन कियो मखवाजि लै, कहि जै जै रघुलाल ॥ ७ ॥
इहि विधि विचरत यज्ञ हय, संग सुभट समुदाय ॥
सप्तमास डोलत भये, अवध नगर ते आय ॥ ८ ॥

पद्धरी छंद।

इक नगर नाम कुंडल विशाल। जहँ सुरथ भूप वर धर्मपाल ॥
नृप प्रजा सर्व तहँ रामभक्त। कोऊ न अन्य देवानुरक्त ॥ ९ ॥
सुनि राम वाजि आगम नृपाल। सादर गहाय बाँधो उताल ॥
मिलि प्रजा भूप सेवक अपार। कीनो सहर्ष यह दृढ विचार १० ॥
मिस याहि सबै प्रभु दरश होय। बिन राम वाजि पावै न कोय॥
इमि ठानि भूप चतुरंग सैन। साजी समस्त भट सुबल ऐन ११ ॥

दोवई छंद।

चंपक १ मोहक २ सुभट रिपुंजय ३ अरु दुर्वार ४ प्रतापी ५ ॥
बल मोदक ६ हर्यक्ष ७ और सहदेव ८ शत्रु संतापी ॥
भूरिदेव ९ गुणमंत सुतापन १० ये दशवीर विशाला ॥
सुरथ वीरके पुत्र धनुर्धर रण कोविद रिपुशाला ॥ १२ ॥

पद्धरी छंद।

नृपराज पुत्र अरु भट अपार। दृढ़ कवच शस्त्र वर विविध धार॥
इत राम बंधु करिकै विचार। भेजो सु दूत वालीकुमार ॥ १३ ॥
अंगद उताल नृप सुरथ पास। आये विलोकि छायो हुलास ॥
सब तिलक भाल गल माल राज। तुलसी सुपत्र शिर मध्य भ्राज १४॥
सादर बिठाय बूझी नरेश। तब वालिपुत्र बोले सुदेश ॥
त्यागिय नृपाल वर मख तुरंग। सोहै न दासरण ईश संग ॥ १५॥
पुनि वृद्ध भूप कीजे न युद्ध। हैं तरुण वीर रिपुदमन उद्ध ॥
तिमि पुष्कलादि भट अमित धीर। जिन हेरि सैन तवहो अधीर १६॥
तब सुरथ भूप भाषे सु बैन। श्रीराम रूपानिधि कमल नैन ॥
जौलौं सु आप इत आय हैं न। तौलौं सुकोउ हय पाय हैं न ॥ १७ ॥
अरु ईश दासको रण अयोग। ताकी सुरीति कह वीर लोग ॥

प्रभु ते सु युद्ध किंहु उचित नाहिं। संयुग अदोष सेवकन माहिं १८॥
पुनि वैस नेम नहिं वीर केर । कीनो विचार बहु ठौर हेर ॥
सो युवा वृद्ध दुहुँ बल प्रशस्त । रण मध्य हेरि लीजो समस्त॥१९॥
तब सैन माहँ भट जे सगर्व । ह्वै हैं निबंधते सपदि सर्व ॥
हौं राम भक्त जानौ न आन । द्रुत कहौ शत्रुहन ठनहिं ठान ॥२०॥
सुनि सुरथ बैन अंगद उताल । रिपुहनहिं आय भाषो सुहाल ॥
तब रामबंधु बहु क्रोध छाय । ध्रुव होय युद्ध दीनी रजाय ॥ २१ ॥
सुनिसकल वीर इत साजि साजि । शत्रुहन जैति कह गाजि गाजि ॥
उत राम जैति वर कीन शोर । धायो नृपाल दल प्रबल जोर ॥२२॥
भिरि गये दोउ दल परम चंड । दुहुँ ओर राम सेवक उदंड ॥
भो द्वंद्व युद्ध तिहि समय भूर । दशहूँ दिशान मध बाण पूर ॥ २३ ॥

दोहा–चंपक अरु पुष्कल भिरे, मोहक मिथिलानाथ ॥
विमल रिपुंजय वीरमणि, भूरिदेवके साथ ॥ २४ ॥
है दुर्वार सुबाहुते, सत्यवान सहदेव ॥
प्रतापाग्र नृप युद्ध कर, संग प्रतापी एव ॥ २५ ॥
नीलरतन हर यक्ष अरु, अंगद सह बल मोद ॥
असुतापन उग्राश्व इमि, भिरे भरे रण मोद ॥ २६ ॥
अपर वीर दुहुँ ओरके, इहि विधि लरत अपार ॥
अस्त्र शस्त्र वर्षत विपुल, छायो हाहाकार ॥ २७ ॥

पद्धरी छंद ।

चंपकहि कीन पुष्कल विहाल । हनि अस्त्र शस्त्र अगणित कराल॥
तब राजपुत्र रामास्त्र घाल । लिय भरत सुवनको बाँधि हाल॥ २८॥
तब हनूमान धाये तुरंत । किय तासु संग संयुग अनंत ॥
नृप पुत्र पवनपुत्रहि उठाय । गहि पुच्छ भूमि डारौं भमाय ॥ २९ ॥
पुनि सँभरि वीर पद पकरि तासु । फेको फिराय बहु दूरि आसु ॥
मुर्छित विहाल भो नृपति बाल । हनुमंत पुष्कलहि छोर हाल ३० ॥
विह्वल विलोकि सुत सुरथ वीर । कीशहि प्रहार किय विपुल तीर ॥
हनुमंत धाय तब तासु चाप । गहि कीन भंग भरि कोहदाप ॥३१॥

पुनि धनुष आन लै नृपति मंड । कोदंड सोउ किय खंड खंड ॥
इमि असी चाप भंजे सुवीर । तब सुरथवीर अति ह्वै अधीर ॥३२ ॥
गरु चंड शक्ति कीनी प्रहार । हनुमंत ताहु धरि भांजि डार ॥
पुनि कीश तासु स्यंदन उछाल । तब भूप कोपि दृढ़ परिघशाल३३॥
चौ०ताछिन तासु सूतरथ स्यंदन ❀ गहि पछारि महि कीन निकंदन॥
पुनि रथ आन बैठि नृप धावा ❀ सोऊ हनुमत वेगि नशावा ३४॥
इहि विधि एकऊन पंचाशा ❀ वीर सुरथ रथ करे विनाशा ॥
अस्त्र पाशुपति तब नृप घाला ❀ तासु घात कछु भये विहाला३५॥
ह्वै सचेत धाये वरियारा ❀ तब नृप ब्रह्मअस्त्र पुनि मारा ॥
तऊ न नेक मुरे हनुमाना ❀ सुरथ महीप अतिहि अकुलाना३६
तब रामास्त्र कपिहि नृप घाला ❀ गिरे भूमि हनुमंत उताला ॥
सुरथ कपिहि दृढ बंधन कीना ❀ गहिपुर गमन हेत चित दीना३७॥

दोहा—तब बोले हनुमंत कपि, अहो सुरथ नृप धीर ॥
अपर अस्त्रते बांधते, तब हे सत्य सुवीर ॥ ३८ ॥
ताछिन कपिहि निबंध लखि, धाये पुष्कल वीर ॥
हने परस्पर दोउ दुहुँ, विविध विषम खरतीर ॥ ३९ ॥

तोमर छंद।

तब नृपति बहु अकुलाय । धनु चंड बाण चढाय ॥
पुष्कल हिये महँ शाल । भे तासु घात विहाल॥ ४० ॥
भूमधि गिरे मुरझाय । रिपुदमन लखि दुख छाय॥
पुनि समय सम धरि धीर । करि कोप धाय सुवीर ॥ ४१ ॥
भूपहि हने बहु बान । छिंदे सु वीर महान ॥
तब शत्रुहन रिस धार । बहु अस्त्र कीन प्रहार ॥ ४२ ॥
ते भये निर्फल सर्व । तब कही नृपति सगर्व ॥
प्रभु दास सत्यजु आहिं । तिन पै न मंत्र चलाहिं ॥ ४३ ॥
यौं कहि सुरथ बलवान । रिपुहनहिं हन इक बान ॥
तिहि लगतही रथ माहिं । गिरि परे कछु सुधि नाहिं ॥ ४४ ॥
पुनि भूप बाणन मारि । दिय अपर भट महि डारि ॥

तिहि समय रिपुहन सैन । चहुँ भजत धीर धरै न ॥ ४५ ॥
लखि कटक गति कपिराय । गरुशैल कर धरि धाय ॥
कीनो सकोप प्रहार । दीनों सुभूप विदार ॥ ४६ ॥
पुनि विपुल तरु गिरि वीर । घाले सु सब नृपधीर ॥
बाणन विभंजि बहाय । कपितन दिये शर छाय ॥ ४७ ॥
सुग्रीव धाय उताल । नख दशन तिहि तनु शाल ॥
तब सुरथ अस्त्र प्रहारि । कपिपतिहि दिय महि डारि ॥ ४८ ॥
तिहि समय प्रभु दल माहिं । कोऊ सुभट इमि नाहिं ॥
जिहि नृपन बंधन कीन । तब विजय दुन्दुभि दीन ॥ ४९ ॥
शत्रुघ्न आदिक वीर । मुर्च्छित सबै रणधीर ॥
कछु पवनपुत्रहि चेत । अरु समस्त अचेत ॥ ५० ॥
सो विवश कपि रणधीर । वर अस्त्र बद्ध सु वीर ॥
नृप सबहि रथ मधि घाल । आयो सु धाम निहाल ॥ ५१ ॥
बैठो सभा हुलसाय । हनुमतहि लै तिहि ठाय ॥
भाषी तबै नृप धीर । अब सुमिरहू रघुवीर ॥ ५२ ॥
श्रीराम आपहि आय । जौलौं न देइँ छुडाय ॥
तौलौं न कोटिन वर्ष । छूटै न अस्त्र प्रकर्ष ॥ ५३ ॥
तब सबहि निरखि अधीन । दृग नीर भरि अति दीन ॥
श्रीरामपद हिय लाय । हनुमंत कह अकुलाय ॥ ५४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सीतानाथ सुभग दयाल भक्तपाल वीर दासहों तिहारो या प्रचंड फास तोरिये ॥ रसिकबिहारी दीन दुखित घनेरो त्राहि त्राहि त्राहि वेगि अब समय बहोरिये ॥ रावरोहि एक अवलंब है कदंब सत्य मेरे दोष देखिकै कबौं ना मुख मोरिये ॥ आपनी बडाई जानि कीजिये कृपालु कृपा पाहि पाहि पाहि मोहिं बंधनते छोरिये५५

नीको हौं बुरो हौं सांचो झूठो हौं खरो हौं खोटो कैसहू हौं तोऊ सब भाषैं रामदास है ॥ रसिकबिहारी मन वच अरु कर्म गति नाथहि प्रसिद्ध सदा हृदय निवास है ॥ भेषज उपाय यंत्र मंत्र तंत्र देवी देव काहूको न मानौं एक रावरीही आश है ॥ मोको वेगि दुसह कलेशतें छुटावो राम यामें नत होत आपहीको उपहास है ॥ ५६ ॥

दोहा–इमि ध्याये हनुमंत तब, ताही छिन श्रीराम ॥
अति उताल दीनो दरश, करुणानिधि छबिधाम ॥ ५७ ॥
शोभित पुष्पकयान मधि, भरत लषण मुनि संग ॥
दूरहिते लखि कपि कही, भूपहि सहित उमंग ॥ ५८ ॥

सो०–देख नृपति मम नाथ, विनय सुनत आये सपदि ॥
भक्तपाल जिहि गाथ, सो विलंब किमि लावहीं ॥ ५९ ॥

चौ० यौं कहतहि कौशलपुर राजा ❀ आये द्रुत लखि सहित समाजा ॥
धाय सुरथ रघुवर पद परसे ❀ जल आनंद नैन दुहुँ बरसे ॥ ६० ॥
राम कही बहु भाँति सराही ❀ क्षत्री वीर धर्म यह आही ॥
सुनि नृप विनय करी कर जोरी ❀ पूजी नाथ सकल रुचि मोरी ६१ ॥
तब रघुवर सब वीर छुटाये ❀ दुहुँ दलके भट मृतक जिवाये ॥
उठि रिपुहन भेंटे मुद भ्राता ❀ गहे कीश प्रभु पद जलजाता ६२ ॥
अपर समस्त प्रभुहि शिरनाये ❀ प्रजा नारि नर दरश अघाये ॥
तीन दिवस तहँ श्रीरघुराजा ❀ रहे भक्तवश सहित समाजा ६३ ॥

दोहा–पुनि रघुवर मुनि बन्धु युत, बैठि सु पुष्पविमान ॥
गये मुदित नृप सुरथको, बहु विधि करि सनमान ॥ ६४ ॥
कोउ न जानत भेद कछु, कहा करत रघुवीर ॥
यज्ञ करत उत नित इतै, हरत भक्तकी पीर ॥ ६५ ॥
रसिकविहारी दुख सबै, मिटे भयो सुखभूरि ॥
दुहूँ ओर आनंद है, चहुँ जै जै धुनि पूरि ॥ ६६ ॥
सुरथ चंपकहि थापि पुर, भये सदल हय साथ ॥
राम बन्धु गमने सुखी, कहि जै जै रघुनाथ ॥ ६७ ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० सुरथयुद्धवर्णनो
नाम दशमो विभागः ॥ १० ॥

दोहा–श्रीरघुवर मख वाजिवर, बिचरत बहु दल साथ ॥
वाल्मीकि आश्रम तहाँ, आयो सुरसरिपाथ ॥ १ ॥
परमरम्य वन हेरिकै, डोलत चहूँ निशंक ॥
अशन करत तृण पियत जल, हिंसत हंक उतंक ॥ २ ॥
मुनि कुटीनते ठौर सो, योजन एक प्रमान ॥
तहँ मृगयाहित आवहीं, सिय सुत सजि धनु बान ॥ ३ ॥
तादिन लव आये तहां, कुश बिन आप अकेल ॥
वन बिचरत मुनि सुतन युत, करत मुदित बहु खेल ॥ ४ ॥
सो लव वरवाजी निरखि, बांचि तासु शिर पत्र ॥
गहि बाँधो तरुते तहाँ, कही न भूमि निक्षत्र ॥ ५ ॥
प्रबल होत भवितव्य गति, कोउ न जानत भेद ॥
औचक प्रगटै बुद्धि जिहि, होवै खेद अखेद ॥ ६ ॥
वाल्मीकि षट कांड जो, सिय सुत करत सु गान ॥
सो तिन हिय भो भ्रम इतो, को हैं राम न जान ॥ ७ ॥
त्यौंहीं मति मुनि सुतनकी, ताछिन गई भुराय ॥
कही न कोऊ वाजि यह, तब पित मखको आय ॥ ८ ॥
ताछिन मुनि बालक लवहि, इमि भाषी समुझाय ॥
वर्ष पंचदश ते अधिक, निज मधि कोउ न आय ॥ ९ ॥
तजौ वाजि ह्याँते चलौ, करिय बाल कहँ युद्ध ॥
ह्वै हैं संग तुरंगके, रक्षक जन भट उद्ध ॥ १० ॥
पुनि मुनि शिष्यनको समर, उचित कहै नहिं कोय ॥
ताहू पै नृप दल अमित, तुम इक ते कह होय ॥ ११ ॥
तब लव भाषी हे सखा, तुम सब हौ द्विजबाल ॥
भोजन भिक्षा पढ़न तजि, और न जानौ हाल ॥ १२ ॥
क्षुधित तृषित ह्वै हौ अतिहि, जावो गेह पराय ॥
इत अबहीं ह्वै है समर, लखि तुव चित्त भ्रमाय ॥ १३ ॥
कही मित्र तुम सत्य यह, हैं अबहीं हम बाल ॥
पै क्षत्रीसुत शुद्ध सो, वीरनके उरशाल ॥ १४ ॥
रामहि इमि अभिमान है, जानत भूमि निक्षत्र ॥
बाँधो बैन उतंक लिखि, मख तुरंग शिर पत्र ॥ १५ ॥

कितहूँ वीर सु आजलों, मिलो न ह्वैहै कोय ॥
जानि परैगी सबहि अब, क्षत्रिय बल इमि होय ॥ १६ ॥
ताछिन हय सेवक तहां, आये वीर विशाल ॥
तिनहिं दूरहीते निरखि, भाजि दुरे द्विजबाल ॥ १७ ॥
लव अकेल सजि बाण धनु, रहे वाजिके पास ॥
सो बंधित लखि बाल ढिग, किय सेवक गण हास ॥ १८ ॥
ते सेवक लखिकै सपदि, छोरन लगे तुरंग ॥
लव बरजे माने न फिर, कीने नैन सुरंग ॥ १९ ॥
तब सीतासुत कोपिकै, सपदि धाय बहु डाट ॥
तिन सब हय सेवकनके, भुज डारे महि काट ॥ २० ॥
भजे विकल तहँते सकल, आये रिपुहन पास ॥
कही सबै गति बिलपिकै, ह्वै हिय निपट हिरास ॥ २१ ॥
शत्रुशमन सुनि चकित ह्वै, कहे विचारि सु बैन ॥
विष्णु होय कै शंभु ध्रुव, सो नर बालक हैन ॥ २२ ॥

प० ॥ रा० ॥ अ० ६० ॥ श्लोक ।

नायं बालो हरिर्नूनं भविष्यति हयं धरः ॥
अथवा त्रिपुरारिः स्यान्नान्यथा मद्धयापहृत् ॥ १ ॥

दोहा—पै हरि हर हो कोट सो, कहा विजय लै जाय ॥
श्रीरघुवर ते काहुको, छल बल कछु न चलाय ॥ २३ ॥
यौं कहि पुनि रिपुदमन द्रुत, सेनापतिहि बुलाय ॥
दई रजायसु युद्ध करि, लावो वाजि छुटाय ॥ २४ ॥

सो०—कालजीत जिहि नाम, सकल सैनपति वीर वर ॥
लै बहु भट बलधाम, चलो साजि चतुरंग दल ॥ २५ ॥

भुजंगप्रयात छंद ।

चमूनाथ लै सैन आयो तहाँई । अकेले सियापुत्र ठाढे जहाँई ॥
कही सो तबै छोरि दे वाजि बाला। करैक्यों वृथा आपनी मृत्यु हाला२६
सिया सूनु भाषी तबै रे अयाना।जुहौंकाल तेरो सु क्यों बाल जाना ॥
कछू वीरता होय वेगै दिखावै । न तो सैनलै फेर पाछै सिधावै॥२७॥
तबै फेर सेनापती यों बखानी । लखौं राम सो रूप, दाया सुठानी ॥
भली है अजौं छोडि दै यज्ञ वाजी।न तौ बाँधि हो तोहि तौ होयराजी२८

तोटक छंद ।

सुनिकै लव वेगहि बाण सजे । धनुतान सँधान सकोप तजे ॥
छिनमें बहु सैन विदारि दई । वर वीरनकी मति हार गई ॥ २९
सजि सायक चाप अनीप घने । करि कोप महाबल अंग हने ॥
नृपराज सबै शर भंजि दिये । बहुरौ तिहि प्राण विहाल किये३०
पुनि स्यंदन खंडि चमूपतिको।किय हाल विहाल कहै गतिको ॥
तब सो द्रुत भीम गयंद चढ़ो । कर धारि गदा बहु कोप मढ़ो३१

तोमर छंद ।

सो गदा कीन प्रहार । लव भंजि तिहि दिय डार ॥
मारो परिघ पुनि चंड । किय सोउ नृप सुत खंड ॥ ३२ ॥
बहुरौ सु लै करवाल । गज शुंड काटि उताल ॥
तिहि दंभ पद धरि वीर । करि शीश चढि रणधीर ॥ ३३ ॥
कीनो मुकुट तिहि छिंदि । पुनि कवच वेगहि भिंदि ॥
दलपतिहि कच कर धार । डारो सु भूमि मझार ॥ ३४॥
तब कालजित अति पुष्ट । मारो लवहि दृढ मुष्ट ॥
पुनि लै कृपाण कराल । तानो सुहस्त उताल ॥३५॥
सो सपदि हनि शर चंड । सह खड्ग भुज किय खंड ॥
तब कोपिकै दलनाथ । लिय गदा वामहि हाथ ॥ ३६ ॥
सोऊ भुजा लव वीर । दिय छिंद हनि खर तीर ॥
तब कालजित वरियार । किय कोपि चरण प्रहार ॥ ३७ ॥
लव पगहु खंडित कीन । सो गिरत शिर हनि दीन ॥
तिहि वीरता लखि वीर । जिय कहत वीर सु वीर ॥ ३८ ॥
पुनि लै कृपाण प्रचंड । लव तासु शिर किय खंड ॥
फिरि विशिषबाणन मारि । दिय सकल सैन विडारि ॥ ३९ ॥
दोहा–लव लाघवता अकथ यह, लरत चमूपति संग ॥
आवत अमित हथ्यार ते, करत तिनहुँको भंग ॥ ४० ॥
लखि यह गति सब थकित है, पुनि दलपतिको घात ॥
विजय आश तजिकै सुभट, भगे विकल विललात ॥ ४१॥
कही जाय रिपुदमन ते, रण गति सकल अधीर ॥
कालजीत दलपालको, वध कीनो शिशुवीर ॥ ४२ ॥

शत्रुशमन सुनि चकित ह्वै, कीनो शोक अपार ॥
पुनि धरि धीरज पुष्कलहि, कही समेत विचार ॥ ४३ ॥
वीर जाहु भट सैन लै, गहि लावो सो बाल ॥
भरतपुत्र सुनिकै सकल, साजो साज उताल ॥ ४४ ॥
ख० गगन०नभ० महि१ ग्रह९निगम४, स्यंदन इते सुढंग॥
हय गज पद चर अपर बहु, दल चतुरंग अभंग ॥ ४५ ॥
इमि सजिकै धाये सकल, सिया सुताहिं लखि वीर ॥
घेरि शस्त्र वर्षन लगे, शक्ति शूल असि तीर ॥ ४६ ॥

दोवई छंद ।

राज पुत्र तिन मध्य अकेले पद मंडल दै युद्धे ॥
खंड खंड करि चंड वीरते बाणन प्राण निरुद्धे ॥
गज तुरंग स्यंदन अरु पदचर लव निशंक बहु भंजे ॥
भये अधीर मरत तजि भागे सकल सुभट मद गंजे ॥ ४७ ॥
तौ लग पुष्कल आय वेगही सैन दशा अवलोकी ॥
फिरौ फिरौ कहि टेर धीर दै भगत अनी सब रोकी ॥
बचे वीर ते अपर भूरियुत भरत पुत्र द्रुत धाये ॥
सकल सुभट मिलि राम पुत्र पै अमित शस्त्र वरसाये ॥ ४८ ॥
लव ते सर्व हथ्यार शरनते छिंदि भूमि मधि डारे ॥
पुनि धनु तान बाण अगणित हनि विकल किये भट सारे ॥
तब पुष्कल बहु विशिख तीरते राजपुत्र तनुशाला ॥
सो फिरि सूत वाजि स्यंदन दलि वीरहि कियो विहाला ॥ ४९ ॥
गिरे भूमि पुष्कल तब हनुमत लवहि वृक्ष लै मारा ॥
सियसुत सपदि छिंदि बाणन ते सो तरु भूमि पँवारा ॥
पुनि करि क्रोध शैल पाहन द्रुत कीश अनेक प्रहारे ॥
सोऊ सकल वीर तीरनतें भंजि महीतलडारे ॥ ५० ॥
पुनि हनुमंत लपेटि पुच्छ मधि चाहो सपदि उछाला ॥
लव अकुलाय उताल मुष्ट हनि कपि लंगूरहि शाला ॥
तासु घात ह्वै विकल वीर तिन छोड दये ततकाला ॥
वेगि सीयसुत दलि बाणन ते कीशहि कियो विहाला ॥ ५१ ॥

चौ०-ताक्षण कपि विचार मनमाहीं। विशिख बाण अब नहिं सहिजाहीं॥
या क्षण मोर मरण भलि बाता ❀ सो न होय वर दियो विधाता५२॥
जो पै युद्ध त्यागि भगि जाऊं ❀ दुहूँ लोक निज हाल नशाऊँ॥
याते उचित करौं छल तौलों ❀ राम बंधु जीतैं इहि जौलौं॥५३॥
इमि विह्वल है ठान विचारा ❀ गिरे कपट ते भूमि मझारा॥
धरणि परत हनुमत दल सारा ❀ हाय हाय करि सभय पुकारा५४॥

प्र० ॥ रा० अ० ६१ ॥ श्लोक ॥

इत्येवं मानसे कृत्वापपातरणमंडले ॥
पश्यतां सर्व वीराणां कपटेन विमूर्छितः ॥ २ ॥

चौ०-ताक्षण सुनि सुवीर कर हाला ❀ धाये रिपुहन अतिहि उताला॥
संग अनेक सुभट रणधीरा ❀ भिरे आय करि नाद गँभीरा॥५५॥

अर्द्धावली छंद ।

कोपि लव वीर तब बाण वर्षा करी ॥ प्रबल भट कटक लखि समर कर्षा भरी ॥ शत्रुहन प्रखर शर सबल बहु तज्जहीं ॥ ते सकल वीर तीरन सपदि भज्जहीं ॥ ५६ ॥ अपर बहु वीर शर शक्ति तोमर घने ॥ जे प्रहारे सबै तेउ बाणन हने ॥ फेरि लव कोपि निज चंड शर छंडिकै ॥ शत्रुहन धनुषडारो धरणि खंडिकै ॥ ५७ ॥ बहुरि रथ सारथी वाजि भंजन करे ॥ बैठि स्यंदन अपर क्रोध रिपुहन भरे॥ शालि दिय तीर बहु वीर लव गातमें ॥ भाल दृग कंठ उर उदर पद हातमें ॥ ५८ ॥ तासमय सीय सुत रंच व्याकुल भये ॥ फेर ह्वै सजग रिपुहनहि बहु शर हये ॥ लगत लवबाण शत्रुघ्न मूर्छित गिरे ॥ हेरि अकुलाय बहु भूप क्रोधित भिरे ॥ ५९ ॥ घेर चहुँ फेरते शस्त्र घालन लगे॥ शूल शर परिघ असि भल्ल शालन लगे ॥ तबहि लव कोपि किय युद्ध चहुँ चक्र दै ॥ मंडलाकार गति धाय पद वक्र दै ॥ ६० ॥ विशिख वर तीर लव वीर तज्जे तबै ॥ धीरख्वै पीरवश नृपति भज्जे सबै ॥ ता समय शत्रुहन सजग ह्वै धायकै ॥ युद्ध किय उद्ध पुनि क्रुद्ध उर छायकै ॥ ६१ ॥ वीर कुश बंधु रणधीर रिपुशाल हैं॥ दोउ अति प्रबल रघुलाल रघुलाल हैं॥ दोउ दोउन हनत बाण संधानकै ॥ दोउ भंजत दुहूँ विधत उर आनकै ॥ ॥ ६२ ॥ तबहिं रिपुदमन सो तीर क्रोधित लियो ॥ जाहिते लवण

वर वीरको बध कियो ॥ सपदि संधानि धनु कान लग तानकै ॥ सबल घालो लगो सो हिये आनिकै ॥ ६३ ॥ घात वश तासु लव आसु मुर्छित गिरे ॥ हरि हरषाय सब धाय चहुँदिशि घिरे ॥ राज-पुत्रहि सपदि शत्रुहन धायकै ॥ धारि रथ मध्य गवने विजय पायकै ॥ ६४॥ यज्ञ हय छोरिल भयो हर्षित हियो ॥ जैति जै जैति जै शोर सबही कियो ॥ कहत जन परस्पर बाल अभिरामको ॥ रूप लखि मुदित मन होय श्रीरामको ॥ ६५ ॥

दोहा—जब इहि विधि लै लवहि सब, चले मुदित जय छाय ॥
तब जो मुनि बालक समर, देखत रहे दुराय ॥ ६६ ॥
सो सबही अकुलायकै, भागे निपट अधीर ॥
कहत सखा अब मिलहि किमि, गहि लैगो नृपवीर ॥ ६७॥
उत लवकी वह गति भई, लखि भाजे सब बाल ॥
जनकसुता सोचैं इतै, कहा करत वन बाल ॥ ६८ ॥
इत उत देखैं सिय कहैं, दिवस गयो द्वै याम ॥
लव शिशुता अजहुँ न तजै, वन डोलै बिन काम ॥ ६९ ॥
पुनि खेलन वन जात सो, आवत सदा उताल ॥
आज प्रातहीको गयो, अबलों फिरो न बाल ॥ ७० ॥
मध्य दिवस आतप छयो, बालक अति सुकुमार ॥
क्षुधित तृषित ह्वैहै सुवन, कहा लगाई बार ॥ ७१ ॥
इहि विधि करहिं विचार सिय, मनहीं मन अकुलाय ॥
ताही छिन द्विज बाल सो, व्याकुल आये धाय ॥ ७२ ॥
निपट विहाल समस्त सो, हाल कहो विलपाय ॥
सुनत जानकी प्रानकी, सुधि बुधि गई भुलाय ॥ ७३ ॥
ते द्विज बालक रण लखो, याते हृदय विहाल ॥
कहि लवगति निज निज कुटी, जाय दुरे ततकाल ॥७४॥
को नृप काको वाजिहै, सिया न जानो भेद ॥
शिर उर धुनत विहाल अति, रुदन करै बहु खेद ॥ ७५ ॥
हाय हाय करि विलपिकै, कहै सिया अकुलाय ॥
कुश मुनि कोउ न को अबै, लावै लवहि छुटाय ॥७६॥
इहाँ अगम वन दूरलो, नगर ग्राम पुर नाहिं ॥

पुनि मुनि गण विन इहि विपिन, और न कोउ रहाहिं॥७७॥
सो सब गये अवंतिका, मुनि गण कुशहू साथ ॥
हाय करौ मैं काह अब, या छिन निपट अनाथ ॥ ७८ ॥
इमि अति विलपतही सिया, ताही छिन कुशवीर ॥
आये औचक मातु गति, निरखत भये अधीर ॥ ७९ ॥
त्रिकालज्ञ मुनि चरित सब, जानत परम सुजान ॥
भेद न प्रगटो रंचहू, मानों निपट अयान ॥ ८० ॥
मातहि शिर नमि जोरि कर, तब कुश बूझो हाल ॥
निज दुख भाषो जानकी, विलपत सकल उताल ॥ ८१ ॥

चौ०-सुनि कुश हीय भयो अतिक्रोधा। मातहि करि बहु भाँति प्रबोधा
साजो द्रुत अभंग तनु त्राणा ❀ चर्म कृपाण शक्ति धनुबाणा८२ ॥
गवने मातु चरण धरि शीशा ❀ सीय दई जय सिद्धि अशीशा ॥
कुश धाये करि क्रोध अपारा ❀दूरहि ते लखि सबहि प्रचारा८३॥
रिपुहन आदि कुशहि जब देखा ❀ छायो हिय आश्चर्य विशेषा ॥
कहत बाल यह मायाकारी ❀ पुनि आयो दूजो तनुधारी ॥ ८४ ॥

दोहा-इक तनुते इत विवश ह्वै, परो सबहि भरमाय ॥
दूजो वपु धरि औचकै, आयो अंग सजाय ॥ ८५ ॥
वय वपु शोभा साज सब, दोऊ एक समान ॥
ध्रुव यह सुरमाया कछू, भेद परत नहिं जान ॥ ८६ ॥
कहत परस्पर चकित इमि, सजग भये सब कोय ॥
ताक्षण लव मुच्छा जगी, अति अलक्ष चहुँ जोय ॥ ८७ ॥
भ्रातहि आवत देखिकै, भयो महाआनंद ॥
तौ लग कुश पहुँचे सपदि, कियो शोर जनवृंद ॥ ८८ ॥
ताक्षण तुर धनुबाण गहि, रथते उछलि उताल ॥
परे भ्रात ढिग वीर लव, सजग भये तत्काल ॥ ८९ ॥

चारी छंद ।

अति मुदित दुहुँ बलवंत सिय सुत सपदि चाप चढ़ाय ॥
चहुँ धाय धाय कराल बाणन घाल दल दिय छाय ॥
तब सकल वीर सुधीर गहि गहि शस्त्र अगणित उद्ध ॥
रिपुशाल आदि विशाल भट बहु करन लागे युद्ध॥ ९० ॥

वर सुभट वनचर भालु मानुष यातुधान अपार ॥
तरु कुधर पाहन शक्ति शर असि परिघ शूल प्रहार ॥
दुहुँ वीर ते बहु तीर हनि हनि करत सबहीं चूर ॥
पुनि मारिकै सु प्रचंड बाणन सकल गातहि पूर ॥ ९१ ॥
तब कोपि रिपुहन वीर तीरन छाय दिय दुहुँ वीर ॥
रणधीर सियसुत तदपि भे तिहि समय कछुक अधीर ॥
कुश अग्नि अस्त्र प्रहार सो लखि वरुणते किय खंड ॥
वायव्य छोडो ताहि पर्वत घालकै चहुँ मंड ॥ ९२ ॥
वर वज्र ते गिरि चूर किय तब कुश महारिस लाय ॥
नारायणास्त्र प्रहार सो रिपुहनहि कछु न जनाय ॥
लखि सीयसुत आरि शाल ते भाषी अहो नृप वीर ॥
अब तुमहिं डारत भूमि हौं सब भाँति होउ सधीर ॥ ९३ ॥
यों कहि प्रहारे तीन शर सो लगतही रिपुशाल ॥
बहु व्यथित ह्वै अकुलाय मूर्छित गिरे भूमि विहाल ॥
तिहि समय हाहाकार भो धाये समस्त नृपाल ॥
तिन सबहि दोऊ बंधु बाणन वेधि डारे हाल ॥ ९४ ॥
सो गति विलोकि समीर सुत तरु कुधर अमित प्रहार ॥
तीरन विदारे सकल ते दुहुँ वीर राजकुमार ॥
पुनि कीश बहु द्रुम शैल पाहन घाल चहुँ दिशि छाय ॥
अकुलायकै सिय पुत्र कुश तब अतिहि कोप बढ़ाय ॥ ९५ ॥
संहार अस्त्र प्रहार कीनो तबहि पवनकुमार ॥
कहि राम राम अचेत मूर्छित गिरे धरणिमझार ॥
पुनि कोपिकै लव कुश दुहूँ बहु चंड बाणन मारि ॥
दल सकल किय विध्वंस भागे सुभट हाय पुकारि ॥ ९६ ॥
सो हेरिकै कपिनाथ धाये शैल तरु गिरि खंड ॥
दुहुँ बंधु पर बरषाय छाये कीन क्रोध प्रचंड ॥
ते सकल राजकुमार बाणन भंजि डारे भूमि ॥
सुग्रीव तब लंगूर घालो भूरि बल युत झूमि ॥ ९७ ॥
कुशवीर कपिपति अंगमें बेधे अनेकन तीर ॥
तोऊ सुकंठन न फिरत फिरि फिरि भिरत भट रणधीर ॥

तब वरुण अस्त्र चलाय सियसुत तिनहिं दीन गिराय ॥
सुग्रीवहू महि परे मूर्छित सकल सुरति भुलाय ॥ ९८ ॥
कपिराज गिरतहि सकल जन इत उत भगे चहुँओर ॥
आरत पुकारत हाय विलपत घोर करि करि शोर ॥
लहि विजय लव कुश दुहुँ परस्पर मिले भरि भरि अंक ॥
पुनि जायकै गहि लीन सो मख वाजि निपट निशंक ॥ ९९ ॥

दोवई छंद।

बहुरि बंधु दुहुँ निर्भय प्रमुदित फिरि चहुँ कटक निहारा ॥
क्रीट मुकुट धनु शर रिपुहनको साज विशद लिय सारा ॥
तब लव हनुमत पुच्छ पकरिकै कही हुलसि हे भ्राता ॥
लै चलि हैं सुठि कपि विनोद हित हो अनंद लखि माता १००॥
गहि सुकंठ लंगूर कुशहु तब कही हमहुँ यह लेहैं ॥
दोऊ बंधु पालि हैं दुहुँ कपि निज निज फेरि लरैहैं ॥
यों गुनि युगल रामसुत इक इक कीश पुच्छ कर धारी ॥
खैंचत चले साज हय लीने विजयी परम सुखारी ॥ १०१ ॥
तब सुकंठ हनुमतहि चेत भो पर अति विवश दुखारी ॥
लखत परस्पर सभय न बोलत दुहुँ निज पुच्छ पसारी ॥
कपि कौतुक लखि हँसत बाल सो ऐंचत लीने जाहीं ॥
दूर जान तिन हरे पौनसुत भाषी कपिपति पाहीं ॥ १०२ ॥
कहिय नाथ अब किहि विधि जीजे भयो अयश अति भारी ॥
किये जिते सब काज आज सो गई वीरता सारी ॥
तब सुकंठ बोले हे कपिवर कहा आपने हाथा ॥
मम उर यही शोच पै अब तौ रक्षक हैं रघुनाथा ॥ १०३ ॥
यों शोचत कपि तौ लग नृपसुत निज कुटीर नियराने ॥
तात्क्षण सिय दोऊ सु कीश लखि दूरहि ते पहिचाने ॥
पै सुकंठ हनुमान मैथिलिहि नहिं देखी सो दूरी ॥
सीता सुतन कही कछु धीरे सपदि नैन जल पूरी ॥ १०४ ॥
तजौ पुत्र दुहुँ कीश वेगि सो मातु रजायसु पाई ॥
छोरि दये कपि भजे जीव लै दुरे सैनमधि आई ॥
उत कुश लव सानंद सियापद परशि विजय गति भाषी ॥

सकल वस्तु लाये सो जननी सन्मुख प्रमुदित राखी ॥ १०५ ॥
दोहा–सिय दुहुँ सुत हिय लायकै, भई परम आनंद ॥
पै देखे कपि याहि ते, कछू वदन मति मंद ॥ १०६ ॥

दोवईछंद ।

ताक्षण कुश भाषी हे जननी सकल अनूपम साजा ॥
पुनि वर वाजि अवधपति मखको मम वाहनके काजा ॥
ताक्षण विदित भई सीतहि गति गिरी धरणि मुरझाई ॥
हाय हाय कहि विलपन लागी चकित निरखि दुहुँ भाई १०७॥
पुनि धरि धीर मैथिली वेगहि यज्ञ तुरंग छुडायो ॥
बहुरि पवित्र नीर लै करमें यह संकल्प दृढायो ॥
जो मन वचन कर्मते हौं निजपति बिन भजौं न कोऊ ॥
तौ अबहीं सब दल पूरब सम विरुज सजीव सु होऊ ॥ १०८॥
यों कहि सिया भूमि जल डारो ताक्षण तहँ सब कोई ॥
विरुज सजीव भये आनंदित प्रात उठे जनु सोई ॥
सो न भेद कछु काहु जनायो राम कृपा अनुमानी ॥
मख तुरंगलै प्रमुदित गमने आय गये रजधानी ॥ १०९ ॥
दोहा–निरखि अवध सरयू सबै, कीन्हो हरषि प्रणाम ॥
गये यज्ञथल शत्रुहन, दल हय युत अभिराम ॥ ११० ॥
सब सानँद प्रभु पद गहे, श्रीरघुवर हरषाय ॥
यथायोग आदर किये, सबहीके सतभाय ॥ १११ ॥
आठ मास दिग विजय करि, नवम प्रवेश तुरंग ॥
सदल कुशल आयो अवध, सविधि सुयज्ञ अभंग ॥११२॥
मख होवै प्रति दिवस वर, जुरो अपार समाज ॥
सुर नर मुनि नित आवहीं, सन्मानत रघुराज ॥ ११३ ॥
इति श्रीरा० र० वि० वि० लवकुशयुद्धवर्णनो नाम एकादशोविभागः ॥११॥

सो०–अश्वमेध वर यज्ञ, करत कौशलाधीश तहँ ॥
मुनि द्विज परम गुणज्ञ, नित आवत मख दरश हित ॥१॥
यज्ञ अवधि द्वै मास, रही व्यतीते मास दश ॥
तब मुनिवर तपराज, वाल्मीकि आये मुदित ॥ २ ॥
दुहुँ सिय सुत ऋषि संग, अपर भूरि मुनि मंडली ॥

सादर सहित उमंग, रहे मुदित मख दरशहित ॥ ३ ॥
लव कुश दोऊ वीर, जिन ठानो बहु युद्धवर ॥
पट कषाय द्रुम चीर, ते धारण कीने सुभग ॥ ४ ॥

चौ०-जाक्षण समर करो दुहुँ बाला ❀ ताक्षण औरहि छटा विशाला ॥
अब सुवेष मुनि शिष्य प्रमाना ❀ इनहिं कियो रण कोउ न जाना ५
वाल्मीकि हियकी हिय राखी ❀ राम पुत्र ये काहु न भाषी ॥
सन्निधि ऋषि जेते गति ज्ञाता । लखि मुनि रुचि किय कोउ न ख्याता
जब सीता मखबाजि छटायो ❀ सुनत तबै सब कहि समुझायो ॥
सो लव कुश जानैं यह बाता ❀ राम अवधपति हैं मम ताता ७॥
पै दोऊ गुरु आज्ञाकारी ❀ याते निज मुख कछु न उचारी॥
सदा रहैं मुनि शीश प्रमाना ❀ तिहि तजि काज करैं नहिं आना८
सो कुश लव तापसके भेषा ❀ शोभित नख शिख अंग सुदेशा ॥
गुरुकृत रामायण नित गावैं ❀ परम रम्य वर वीण बजावैं ॥९॥
राग रागिनी समय समाना ❀ शुद्धवर्ण स्वर ताल प्रमाना ॥
लय विश्राम सु भेद समेता ❀ गान करैं सह वाद्य सचेता॥१०॥
तिन लखि सब जन अति हरषावैं ❀ मुनि द्विज नृप निज निकट बुलावैं
सादर बारहिं बार गवावैं ❀ रामायण सुनि अचरज लावैं ११
सुनि रघुवर दुहुँ वेगि बुलाये ❀ गुणी समाज जोरि बैठाये ॥
तिन बिच रामायण तिन गाई ❀ सुनत सकल हिय विस्मय छाई १२
अति प्रसन्न ह्वै राम प्रवीना ❀ वसु दशसहस १८०००स्वर्ण तिन दीना
तब भाषी दुहुँ रघुवर पाहीं ❀ हम मुनि शिष्य लेत धन नाहीं १३॥
पुनि इमि भाषी राम नृपाला ❀ हम सुनिहैं सब ग्रंथ रसाला ॥
तब लै गुरु आज्ञा नित आई ❀ बहु दिन लग रामायण गाई १४
इहि विधि नित अनंद अधिकाना ❀ पूरण यज्ञ समै नगिचाना ॥
तब रघुवर निज हीय विचारी ❀ अब इत सिय आगम शुभकारी १५
पुनि सुहिं वाल्मीकि मुनिराई ❀ सिय अंगीकृत हित समुझाई ॥
याते जाय लषण लै आवैं ❀ यज्ञ दरश सीताहू पावैं ॥ १६ ॥
यों गुणि बंधुहि दई रजाई ❀ ऋषि आश्रम ते सीतहि लाई ॥
राख्यौ वाल्मीकि मुनि पासा ❀ सुनत लषण हिय भयो हुलासा १७

दोहा—वाल्मीकि मुनिके जु हैं, शिष्य महोदय नाम ॥

तिन युत रथ लैकै लषण, वेगि गये तिहि ठाम ॥१८॥
प्रभु आज्ञा कहि शीश नमि, लाये अति समुझाय ॥
वाल्मीकि ढिग सीयको, राखी राज रजाय ॥ १९ ॥

प्र० रा० ॥ अ० ६६ ॥ श्लोक ॥

इत्युक्त्वा लक्ष्मणो रामं रथे स्थित्त्वा नृपाज्ञया ॥
सुमित्रमुनिशिष्याभ्यां युतोगाद्भूमिजाश्रमम् ॥१॥ इत्यादि ॥

दोहा–जादिन मख पूरण हुतो, तादिन आई सीय ॥
सुनि अतिही आनँद भयो, पुर परिजनके हीय ॥ २० ॥
सो मखपूरण दिवस प्रभु, गुरु मुनि आयसु पाय ॥
दिये दान बहु सहित विधि, श्रद्धा भक्ति दृढ़ाय ॥ २१ ॥

दोवई छंद।

पुनि जेते नृप अरु नृपरानी नरपति पुत्र समाजा ॥
नृपति पुत्र नारी ये सबही सहित उचित रघुराजा ॥
ह्वै पुनीत इकठौर भये तब गुरु वासिष्ठ मुनि वृंदा ॥
लै शुचि जल समस्त अभिषेके बाढो हृदय अनंदा ॥ २२ ॥
पुनि अगस्त्य मुनि खड्ग मंत्रि कै सविधि राम कर दीना ॥
सो लै वाजि पीठ प्रभुधारा दिव्यरूप तिहि लीना ॥
ताजि पशुगात देव वपु ह्वै कै बैठि विमान सिधारा ॥
सुर नर मुनि अवलोकि तासु गति कियो सु जैजैकारा ॥ २३ ॥

प्र० ॥ रा० ॥ अ० ६७ ॥ श्लोक।

करवाले धृते पृष्ठे रामेण स ह यः क्रतौ ॥
पशुत्वं तु विहायाशु दिव्यरूपमविंदत ॥ २ ॥
विमानवरमारुह्य अप्सरोभिः समंततः ॥
चामरैर्वीज्यमानश्च वैजयंत्या विभूषितः ॥ ३ ॥
गतोसौ शाश्वतस्थानं रामपादप्रसादतः ॥
पुनरावृत्तिरहितं शोकमोहविवर्जितम् ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

दोवई छंद।

बहुरि देव सब संविधि तृप्त करि पूरण आहुति दीनी।
अपर क्रिया मख अंत उचित सो सकल यथारथ कीनी ॥
अश्वमेघ वर यज्ञ समापत भयो मुदित सब कोई ॥
नृत्य गान सन्मान दान बहु चहुँ जैजै ध्वनि होई ॥२४॥

दोहा–पुनि गुरु मंत्री राम मिलि, कियो विचार दृढाय ॥
सबहि बिदा अब दीजिये, भयो वर्ष इत आय ॥ २५ ॥
चौ०-तब रघुवर जन निकट बुलाये ❀ सबहि यथोचित काज दृढाये ॥
भूपनके सतकारन हेता ❀ थपे अनुज तिहुँ परमसचेता ॥२६॥
द्विजगण आदर अर्थ महीशा ❀ दै शिख राखे निपुण कपीशा ॥
मुनि जन मानन काज कृपाला ❀ आरोपित किय लंकनृपाला॥२७॥
अपर जनन परतोषन हेता ❀ राखे सेवक सखा सचेता ॥
तियन बिदा रनिवास मझारा ❀ इमि प्रबंध रघुवर किय सारा ॥२८॥

दोवई छंद।

इहि विधि बिदा प्रबंध ठानि पुनि राघव हृदय विचारी ॥
ऋषि आश्रमते आये सीतहि बीत गये दिन चारी ॥
लषणहि पठै बोलि लीनी मैं पुनि मुनि पासहि राखी ॥
ऐसे समय शपथ होवे तो भली भूरिजन साखी ॥ २९ ॥
दोहा–यों विचारि श्रीराम तब, सभामध्य द्रुत आय ॥
दूतन प्रति आज्ञा दई, ताक्षण सबहि सुनाय ॥ ३० ॥
वाल्मीकि मुनिनाथको, मम दिशिते शिरनाय ॥
विनय करो सिय प्रात निज, शपथ देय नित आय ॥ ३१॥
तब चर मुनि ढिग जायकै, कही कही जिमि राम ॥
भाषी ऋषि आशीषदै, पुजै राज मन काम ॥ ३२ ॥
चौ०–भयो शोर चहुँ ओर सु भारी ❀ जुरे प्रभात अमित नर नारी॥
नित्य नेम करि श्रीरघुराई ❀ शोभित भये सभा मधि आई ३३ ॥
ताक्षण वाल्मीकि मुनिनाथा ❀ आये लै सिय कुश लव साथा ॥
उठे राम नमि सहित समाजा ❀ आशिष दीन मुदित ऋषिराजा ३४॥
नख शिख अंग सु वस्त्र दुराये ❀ कर जोरे लज्जित शिरनाये ॥
वाल्मीकि पाछे सिय ठाढी ❀ शोक विरह व्रीड़ागिनि बाढी ॥३५॥
दोऊ नृपसुत मुनि पट धारी ❀ खरे मातु युत सभा मझारी ॥
त्यों सिय वसन कषाय निहारी ❀ भये सकल नर नारि दुखारी ३६॥

तब मुनि कही सुनौ रघुनाथा ❀ अति पुनीत सिययुत तवगाथा ॥
सीय समान पतिव्रत नारी ❀ नहिं तिहुँ लोक धर्मधुरधारी ॥३७॥
हम बहु नेम धर्म व्रत लीना ❀ विपुल सहस्र वर्ष तप कीना ॥
ते मम सब निरफल ह्वै जाहीं ❀ जो कछु दोष होय सिय माहीं३८॥
ये कुश लव दुहुँ शिष्य हमारे ❀ हैं रघुवीर सुपुत्र तिहारे ॥
यौं कहि सत प्रतीति मुनि दीनी ❀ सुतन सहित सिय सन्मुख कीनी ३९
तब करजोरि मुनिहिं शिरनाईं ❀ सत्य वचन बोले रघुराई ॥
परम प्रमाण वाक्य तव नाथा ❀ प्रभु शिख हौं धरि लई सुमाथा४०
पुनि बोले प्रभु मुनिहि विनीता ❀ हौं जानो सिय परम पुनीता ॥
पै पुरजन कछु अनुचित भाषी ❀ तब कछु दिन प्रभु आश्रम राखी४१॥
हैं मम पुत्र दुहूँ मैं जानो ❀ पूत मैथिली सत्य बखानो ॥
ताक्षण सुर नर मुनि चहुँ ओरा ❀ कही शुद्ध सीता करि शोरा४२॥
तिहि औसर पिय हिय गति जानी ❀ सिय निशंक ह्वै त्याग गलानी॥
हाथजोर पतिपद उर आनी ❀ महि टकलाय कही वरवानी ४३ ॥

दोहा—जो अनन्य मन कर्म वच, सदा भजे रघुराय ॥
तौ मोको याही समय, विवर देहि महि माय ॥ ४४ ॥

प्रश्न॥ वाल्मीकीये ॥ उत्तरकांडे सर्ग ॥ ९७ ॥

सर्वांस्तानागतान्दृष्ट्वा सीता काषायवासिनी ॥
अब्रवीत्प्रांजलिर्वाक्यमधोदृष्टिरवाङ्मुखी ॥ ५ ॥
यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिंतये ॥
तथा मे माधवी देवी विवरं दातु मर्हति ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—यों सिय मुख ते कढ़त ही, धरणी भई दरार ॥
इक सिंहासन विवरते, प्रगटो तेज अपार ॥ ४५ ॥
शीश धरे तिहि नाग बहु, ताही क्षण महि आय ॥
सिंहासन पै सीयको, कर गहि लई बिठाय ॥ ४६ ॥
सो सिंहासन वेगही, पुनि गो धरणि मझार ॥
विवर भयो पूरित सपदि, रही न भूमि दरार ॥ ४७ ॥

जै जै छायो शोर चहुँ, व्योम पताल मझार ॥
सुरगण अति आनंद ह्वै, वरषे सुमन अपार ॥ ४८ ॥
अंतर्द्धान सियाहि लखि, सब नर नारि पुकार ॥
विह्वल बहु विलपात चहुँ, छायो हाहाकार ॥ ४९ ॥
श्रीरघुवीर अधीर अति, कियो भूमिपै कोप ॥
लषण लाव धनु शर अबै, करौं धरणिको लोप ॥ ५० ॥
तब सुर मुनि कर जोरिकै, विनय करी समुझाय ॥
है तव अरधंगी सिया, प्रभु विहाय कहँ जाय ॥ ५१ ॥
सियहि तजी बिन दोष प्रभु, यों तिहि मातु रिसाय ॥
लै गमनी निज धाम पुनि, देहै अवध पठाय ॥ ५२ ॥
अंतर मग प्रभुते प्रथम, गई सिया तव धाम ॥
सदा निरंतरसे इहै, लखि लीजो श्रीराम ॥ ५३ ॥
सुनि रघुवर प्रमुदित भये, देव गये निज धाम ॥
तादिन नैमिष मध्य सब, कीनो निशि विश्राम ॥ ५४ ॥

चौ०-प्रात समय पुनि जुरो समाजा ❋ भयो समस्त विदाको साजा ॥
ताक्षण वाल्मीकि मुनिनाथा ❋ दै लव कुशही सप्तम गाथा५५॥
पुनि भाषी यह यज्ञ प्रयंता ❋ अबहीं कहैं सुनैं सब संता ॥
अंत कथा वह गुप्तहि राखौ ❋ सहस वर्ष पाछे पुनि भाषो॥५६॥
तब तिन निज गुरु शीष प्रमाना ❋ गायो सुनि सब अचरज माना ॥
ताक्षण शिव ब्रह्मासुर राजा ❋ बोले सकल सु देव समाजा५७॥

दोहा-प्रभु तव आविर्भाव ते, वर्ष सहस चौवीश ॥
प्रथमहि विरचो ग्रंथ यह, वाल्मीकि मुनि ईश ॥ ५८ ॥
सो कुश लवको कांडषट, प्रथम दये ऋषिराज ॥
दीनो सप्तमकांड यह, प्रभु तव सन्मुख आज ॥ ५९ ॥
वेदमात सर्वोपरी, गायत्री जगमूल ॥
चतुर्विंश वर वर्णमय, ब्रह्म अनादि अतूल ॥ ६० ॥
सो चौवीस सुवर्ण जे, वेदमातके आय ॥
सहस सहस अश्लोक प्रति, ते इक इक इहि माय ॥ ६१ ॥
यातें उत्तम लोक तिहुँ, याते काव्य न आन ॥
परम प्रमाणिक ग्रंथ यह, है वर वेद समान ॥ ६२ ॥

भानु चंद महि सिंधु ये, जबलग विदित रहाय ॥
वाल्मीकिकृत ग्रंथ यह, तौलग अचल सदाय ॥ ६३ ॥
सुनि सु कांडलै सातहू, श्रीरघुवर हुलसाय ॥
हिय लगाय दिय हनुमतहि, लियो सु शीश चढ़ाय ॥६४॥
ताक्षण देव अदेव सब, अति आनँद उर आन ॥
कही धन्य जै जैति जै, वाल्मीकि भगवान ॥ ६५ ॥
इमि अतिही आनंद युत, नैमिष भयो समाज ॥
पुनि सबही सादर उचित, बिदा किये रघुराज ॥ ६६ ॥
इहि विधि पूरण यज्ञ भो, परमसुखी श्रीराम ॥
बिदा होय मिलि उचित जन, गये सु निज निज धाम॥६७॥

चौ०-पुनि समाज संयुत श्रीरामा ❀ आये अवध लहो विश्रामा ॥
सहित कुटुम्ब मुदित रघुराजा । करत नीति मय नित सब काजा६८
राम पुत्र कुश लवहि निहारी ❀ रहत सदा पुरलोग सुखारी ॥
सब जननी राखैं समप्यारा ❀ एक सरिस दुहुँ राजकुमारा६९॥
वाल्मीकि वर ग्रन्थ अनूपा ❀ सादर सुनत प्रजा अरु भूपा ॥
धन्य धन्य श्रीराम चरित्रा ❀ पंचम वेद सु परम पवित्रा ७० ॥

प्र०॥ रामाश्वमेधे ॥ अध्याय ॥ ६६ ॥ श्लोक॥

इत्युक्तौ तौ सुतौ रामचरित्रं बहुपुण्यदम् ॥
आगायतां महाभागौ सुवाक्यपदचित्रितम् ॥ ७ ॥
वीणाया रणितं श्रुत्वा तालमानेन शोभितम् ॥
निखिला परिषत्तत्र शालभंजीव चित्रिता ॥ ८ ॥
हर्षादश्रूणि मुंचंतो रामाद्या भूमिपास्तथा ॥
तद्गानं पंचमो वेदो विहिताश्चित्रितैः पदैः ॥ ९ ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० अश्वमेधयज्ञांतवर्णनो नाम द्वादशा विभागः १२॥

चौ०-इहि विधि पुनि बहु वर्ष वितीते ❀ पूरित सकल मोद सबहीते ॥
राम मातु वय वृद्ध सुखारी ❀ युत अनंद सुरलोक सिधारी १॥
पुनि क्रम क्रम सब दशरथ रानी ❀ गईं देवपुर आनँदसानी ॥
ते सब जाय रहीं पति पासा ❀ सेवैं प्रभुहि समेत हुलासा ॥२॥
सबके सकल यथोचित कर्मा ❀ समय समय प्रति संयुत धर्मा ॥
कीने राम सप्रेम अपारा ❀ लोक वेद कुल विधि अनुसारा ३॥

तिहि पाछे बीते कछु वर्षा ❋ अंगिरादि ऋषि आप सहर्षा ॥
भाषी केकय भूप युधाजित ❋ पठये हमाहिं नाथ ढिग या हित ४॥

दोहा–कही निकट मम देशके, है नद सिंधु अनूप ॥
तिहि दुहुँ तटवर भूमि तहँ, है गन्धर्व जु भूप ॥ ५ ॥
तीस कोटि वर वीर हैं, युद्ध उद्ध गन्धर्व ॥
तिनहिं जीति प्रभु लीजिये, तासु राज्य शुभ सर्व ॥ ६ ॥

चौ०-तब रघुवर द्रुत भरत बुलाई ❋ कही जाहु बहु लै कटकाई ॥
तिनहिं जीति दुहुँ सुत करि राजा ❋ आवो पुनि इत सहित समाजा ७॥
इमि कहि प्रभु दुहुँ सुतन बुलाये ❋ पुष्कल तक्ष आय शिरनाये ॥
दोउनको अभिषेक सु कीना ❋ प्रमुदित राज राजपद दीना ॥८॥
तब लै भरत अनीक अपारा ❋ ते मुनि गण दुहुँ राजकुमारा ॥
वेगि गये मातुल मिलि साजे ❋ भिरे जाय दोऊ दल गाजे ॥ ९ ॥
सप्तदिवस निशि युद्ध अपारा ❋ भयो भरत तब अस्त्र प्रहारा ॥
सो संवर्त्त अस्त्र ते सारे ❋ तीसकोटि गंधर्व सँहारे ॥ १० ॥
भरत विजय करि नगर निहारे ❋ परम अनूप सुभग सुखकारे ॥
तक्ष शिलापुर तक्षहि दीना ❋ पुष्कलावती पुष्कल कीना ॥११॥
भूरि भूमि वर राज अपारा ❋ दुहुँ पुर साजविशद बहु सारा ॥
पंचवर्ष तहँ भरत रहाये ❋ करि प्रबंध पुनि अवध सिधाये॥१२॥

दोहा–मिलि सबही प्रमुदित रहे, इतै भरत हुलसाय ॥
तिय युत निज निज राज उत, करत सदा दुहुँ भाय ॥१३॥
इत रघुवर पुनि लषणके, दोऊ सुतन बुलाय ॥
करि अभिषेक सुबंधु सँग, दीने सदल पठाय ॥ १४ ॥
विशद कारुपथ देश जो, उत्तर भूमि मझार ॥
तहँ अंगद पुर सजसो, अंगद लहो अपार ॥ १५ ॥
मल्लभूमि मधि सुभग थल, चंद्रकांति पुर नाम ॥
चंद्रकेतु किय राज तहँ, सुभग देश सुखधाम ॥ १६ ॥
इमि दुहुँ सुतन सुराज दै, करि कछु दिन तहँ वास ॥
भरत लषण पुनि मोदयुत, आये रघुवर पास ॥ १७ ॥
इहि विधि राम सुनीति युत, बंधु सुतन दै राज ॥
प्रमुदित कौशल नगर नित, रहत समेत समाज ॥ १८ ॥

चौ०-एक समय इक तापस आयो ❀ श्याम रूप तनु तेज सु छायो ॥
विदित कराय सु आयसु पाई ❀ जाय सु बैठो शीश नवाई ॥१९॥
आदर तासु राम बहु कीना ❀ बोलो तापस परम प्रवीना ॥
कछु बिनवौं एकांत मझारी ❀ सुनिय कृपा करि अवधविहारी २०
तब द्रुत लषणहि राम बुलाई ❀ कही द्वार रक्षौ दृढ जाई ॥
जौ लग करैं बात हम दोई ❀ तौ लग इत आवै नहिं कोई ॥२१॥
याक्षण कोउ भूलि ढिग ऐहै ❀ सो ध्रुव दंड प्राण बध पैहै ॥
सुनि लक्ष्मण धनु बाण सजाई ❀ ठाढे भये द्वारपर जाई ॥ २२ ॥
तब रघुवर अरु तापस दोऊ ❀ रहे भवन तीजो नहिं कोऊ ॥
ताक्षण तिहि बूझी रघुनाथा ❀ सुनि भाषी सु जोरियुग हाथा २३
रगे कहँ विधि प्रभु पास पठाई ❀ शीश नाय यह विनय कराई ॥
सत्यसिंधु राघव प्रणपालक ❀ जनरक्षक दुर्जन दल घालक २४
एक समय प्रभु करी रजाई ❀ हम सुर लोक लखहिंगे आई ॥
तब मैं बूझो समय प्रमाना ❀ ग्यारह सहस वर्ष प्रण ठाना ॥२५
सो अब अवधि आय नियराई ❀ याते प्रभुको सुरति दिवाई ॥
पुनि जिमि नाथ हृदय रुचि होई ❀ कीजे राज रजायसु सोई ॥२६॥
सुनि बोले रघुवर तिहि पाहीं ❀ हम मिथ्या प्रण नाहिं कराहीं ॥
पै विधि जानत मो हिय बाता ❀ मुहि तजि अवध न और सुहाता २७
याते सदा अवध पुर माहीं ❀ रहैं मुदित हम अनत न जाहीं ॥
जु पै हेतु वश कितहु सिधावैं ❀ तौ पुनि वेगि अयोध्या आवैं २८
पुनि चर अचर अवधपुर वासी ❀ हैं अनन्य मम परम उपासी ॥
एकहु दिवस दरश नहिं पावैं ❀ तौ सबही क्षण क्षण अकुलावैं २९
ये मुहिं सकल प्राणते प्यारे ❀ काहू करौं न क्षण भर न्यारे ॥
मैं इनको मेरे सब आहीं ❀ दोऊ हिय दुहुँ सदा बसाहीं ३०
याते हौं निज समय प्रमाना ❀ करौं सत्य सो जो प्रण ठाना ॥
लखि सुरलोक अवधपुनि ऐहौं ❀ पै प्रियजन सबही सँग लैहौं ३१
इमि रघुवीर तापसहि भाषी ❀ चलन चहो सो सब उर राखी ॥
तौ लग दुर्वासा मुनि आये ❀ राम द्वार द्रुत वचन सुनाये ॥३२॥
कहाँ राम हम तिन ढिग जैहैं ❀ वेगि कहौ नत शाप सुदैहैं ॥
तब करजोरि लषण शिरनाई ❀ दीन गिरा करि विनय सुनाई ३३
नाथ नाथ कछु मंत्र कराहीं ❀ तहाँ गमन हित आज्ञा नाहीं ॥

याते नेक धीर प्रभु धारैं ❀ अबहिं कौशलाधीश पधारैं ॥ ३४
तब दुर्वासा कही रिसाई ❀ विदित करौ मम आगम जाई ॥
नातर शाप देत हौं भारी ❀ भस्म होय सब पुर नर नारी ३५॥
लखि मुनि गति किय लषण विचारा ❀ दुहूँ भाँतिते मरण हमारा ॥
प्रभु ढिगगये दंड वध होई ❀ नातर अबहि नशत सब कोई ३६
राम बंधु तब कीन विचारा ❀ मोतनु दिये बचै जन सारा ॥
तौ यामहँ कछु संशय नाहीं ❀ मुनिआगम द्रुत विदित कराहीं ३७

दोहा—निज तन धन सुख हानिते, बहु जन सुखी रहाय ॥
तौ याते उत्तम न कछु, यों सब सुमति कहाय ॥ ३८ ॥
पुनि तन मन धन प्राण जन, छल बल कल किहुँ रीति ॥
होवै पर उपकार तौ, कीजे सब तजि भीति ॥ ३९ ॥
यौं गुणि लषण उताल अति, किये निचोहे नैन ॥
गये राम गृह दूरिते, कहे दीन ह्वै बैन ॥ ४० ॥
प्रभु दुर्वासा मुनि खड़े, द्वार मध्य सहरोष ॥
प्रभु दरशन बिन और विधि, ऋषि हिय होय न तोष॥४१॥

चौ०—निरखि लषण रामहिं रिस छाई ❀ कही कछू नहिं रहे चुपाई॥
वेगि तापसहि दई रजाई ❀ सो गमनो द्रुत विनय सुनाई ४२
उठि तुरंत प्रभु द्वार सिधारे ❀ मुनि पद गहि सन्मानि बिठारे ॥
तब दुर्वासा कही उताला ❀ याहित हम आये रघुलाला ४३॥
हम किय वर्ष विविध तप भूरी ❀ आज भई निर्बिघ्न सु पूरी ॥
व्यापी क्षुधा अतिहि इहि काला ❀ वेगि करावो अशन रसाला ४४॥
सुनि उताल व्यंजन मँगवाये ❀ सरस पुनीत विविध मनभाये ॥
भोजन सविधि सप्रेम कराये ❀ दै अशीश ऋषि मुदित सिधाये ४५॥
पुनि रघुवर गुरु सचिव बुलाई ❀ निज प्रण गति कहि सकल सुनाई॥
गद्गद कंठ नीर भरि नैना ❀ सत्य सिंधु बोले इमि बैना ४६॥

दोहा—बिन वध कीने जाय प्रण, बंधु न मारो जाय ॥
काह करौं अब या समै, मुहिं निज मरण सुहाय ॥ ४७ ॥
सुनि लक्ष्मण कर जोर कै, बोले निपट निशंक ॥
मम वध कीजे नाथ द्रुत, या क्षण मोह कलंक ॥ ४८ ॥
तब गुरु मंत्री सब कही, धर्म सुनीति प्रमाण ॥
सत्य बात यह त्याग वध, दोऊ एक समान ॥ ४९ ॥

सुनि रघुनाथ सुधर्मरत, बिलखि कही शिरनाय ॥
किये त्याग हम लषण तव, बध समान यह आय ॥ ५० ॥
चौ०सुनत लषण तुरतहि शिरनाई ❀ अति उताल सरयू तट जाई ॥
रामचरण पंकज हिय ध्याई ❀ बैठि अखंड समाधि लगाई ५१ ॥
श्वासहि ऊर्ध्व चढ़ाय ब्रह्मंडा ❀ कीनो प्राणायाम उदंडा ॥
पुनि तनु भयो सुअंतरध्याना ❀ काहू कछू न भेद लखाना ५२ ॥
प्र० ।वा०॥ उ० कां० स० १०६ ॥ श्लो० ।
विसर्जये त्वां सौमित्रे माभूद्धर्मविपर्ययः ॥
त्यागो वधो वा विहितः साधूनां ह्युभयं समम् ॥ १ ॥
रामेण भाषिते वाक्ये बाष्पव्याकुलितेंद्रियः ॥
लक्ष्मणस्त्वरितः प्रायात्स्वगृहं न विवेशह ॥ २ ॥
स गत्वा सरयूतीरमुपस्पृश्य कृतांजलिः ॥
निगृह्य सर्वस्रोतांसि निःश्वासं न मुमोच ह ॥ ३ ॥
अदृश्यं सर्वमनुजैः सशरीरं महाबलम् ॥
प्रगृह्य लक्ष्मणं शक्रस्त्रिदिवं संविवेश ह ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥
चौ०बंधु वियोग राम अकुलाने ❀ अपर सकल जन अति विलपाने ॥
ताही क्षण नारद मुनि आई ❀ सबहि धीर बहु भाँति धराई ५३ ॥
पुनि एकांत राम ढिग जाई ❀ नारद कही सुनिय रघुराई ॥
लषण प्रथम गवने सुरधामा ❀ तहाँ जाय करिहैं सब कामा ५४ ॥
कोऊ नृप कहुँ गमन कराही ❀ तहाँ सु सेवक प्रथमहि जाही ॥
यथायोग सब साज समाजा ❀ सजिहैं लषण सहित सुरराजा ५५ ॥
जब सुरलोक निरखि प्रभु ऐहैं ❀ तब लक्ष्मण पुनि संग सिधैहैं ॥
मुदित सहानुज अवध सदाई ❀ हास विलास अखंड रहाई ५६ ॥
सुनि मुनि वचन धीर उर धारी ❀ गे ऋषि कहि जै अवधविहारी ॥
यद्यपि राम अयोध्या माहीं ❀ रहैं लषण बिन कछु न सुहाहीं ५७ ॥
तब रघुवर वर दूत बुलाई ❀ कही कहौ रिपुहन ढिग जाई ॥
दोऊ सुतन राज्यदै आवैं ❀ मेरेही ढिग सदा रहावैं ॥ ५८ ॥
दूत उताल मधुपुरिहि जाई ❀ प्रभु संदेश कहो शिरनाई ॥
सुनि रिपुहन दुख सुख दुहुँ छायो ❀ वेगि सुतन अभिषेक करायो ५९ ॥
दोहा—मधुपुर राज सुबाहु को, दीनो बहु सुखसार ॥
दयो शत्रुघातिहि विशद, वै दिशि देश सुढार ॥ ६० ॥

दुहुँ पुत्रन इमि राजदै, आये अवध उताल ॥
मिले चरण गहि भ्रात लखि, मुदित भये रघुलाल ॥ ६१ ॥
पुनि रघुपति निज सुतनको, कीनो वर अभिषेक ॥
सरयू दक्षिण राज कुश, उत्तर लव सविवेक ॥ ६२ ॥
करत राज कुश लव दुहूँ, पितु आज्ञा अनुसार ॥
राम सरिस सब कृत्य वर, बल गुण धर्म विचार ॥ ६३ ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि०राज्यविभागवर्णनोनाम त्रयोदशोविभागः ॥ १३ ॥

हरिगीतिका छंद ।

श्रीराम दोऊ सुतन दै सब राजभार प्रमोदमें ॥
नित करत विविध विहार लीला सुजन सहित विनोदमें ॥
कपि केसरीसुत सेवहीं सानंद प्रभु पद प्रीतिसे ॥
मुनि रचित रामचरित्र वर्णत सुनत सादर रीतिसे ॥ १ ॥
जबसे लखो वर वाल्मीकि सु ग्रंथ हनुमत प्रेमते ॥
तबसे सहर्ष प्रकर्ष आपहु रचत प्रभु यश नेमते ॥
हनुमाननाटक नाम धरि शुभ ग्रंथ कीनो स्वक्ष जो ॥
सुनि कृतहुते अति रुचिर छंद प्रबंध सह पद लक्षसो ॥ २ ॥
पाषाण पत्रन पै लिखो नखते विशुद्ध सुधारिकै ॥
राखो सुकंठ समस्त रामचरित्र विशद विचारिकै ॥
करिकै सु पूरण एक दिन औसर विलोकि अनंदको ॥
कर जोरि निज कृत ग्रंथ नाटक विदित किय रघुचंदको ॥ ३ ॥
कपिकाव्य उत्तम मुनिहुते सुनि राम अति प्रमुदित भये ॥
बहु बार बार सराहि कीशहि पुलकि अंक लगा लये ॥
ऋषि विप्र कवि कोविद सुरासुर श्रवण करि ज्ञाता सबै ॥
भाषी हनूमत सरिस तिहुँपुर कोउ नहिं बुधिवर अबै ॥ ४ ॥
श्रीराम तब हनुमंत सों बोले अतिहि सकुचायकै ॥
हे वीर हम कछु चाहहीं सो देहु हिय हुलसायकै ॥
सुनि दीन ह्वै कपि कही कौन पदार्थ इमि बहु श्रेय है ॥
तनु प्राण हौं अर्पित कियो दृढ बहुरि काह अदेय है ॥ ५ ॥
तब मुदित ह्वै रघुवीर कह तुव रचित ग्रंथ अपार जो ॥
नाटक उताल दुराय आवो सिंधु नीर मझार सो ॥

इहि देखिकै वर वाल्मीकि प्रभाव लघु जन मानि हैं ॥
सो गाथ है जग पूज्य तिहि लघुता किये बहु हानि हैं ॥ ६ ॥
सुनि ईश आयसु वीर गवने पै कछू मुख दीन भो ॥
लखि राम दिय बरदान जाते मुदित कीश प्रवीन भो ॥
कलिकाल मधि तुव ग्रंथ यह कछु कोउ नृप प्रगटाय है ॥
हनुमाननाटक विदित रैहै श्रम वृथा नहिं जाय है ॥ ७ ॥
सुनि वेगही कपि जाय प्रमुदित सिंधु वन गंभीर में ॥
लिपि उपल डारे सब गिरे बहु मध्य कछु तट नीरमें ॥
द्रुत आय पुनि प्रभु पास सहित हुलास विनय सुनायकै ॥
सेवन लगे नित चरण सादर परम प्रेम बढाय कै ॥ ८ ॥
जहँ होत रामचरित्र तहँ हनुमंत वेगि सिधावहीं ॥
सादर सुनैं कर जोर शिर धरि नैन भरि पुलकावहीं ॥
याते सबै करि नेम आसन प्रथम कपि हित राखहीं ॥
शुचि सविधि प्रेम समर्थ श्रद्धा सहित प्रभु यश भाषहीं ॥ ९ ॥

प्रश्न० ॥ वाल्मीकिटीकायाम् ॥ श्लोक।

यत्र यत्र रघुनाथकीर्त्तनं तत्र तत्र कृत मस्तकांजलिम् ॥
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ १ ॥

हरिगीतिका छंद।

कोऊ करै विधि भंग कहुँ अस्थान अरु अभिमान ते ॥
अपराध अनुचितनेक सो सहिजाय नहिं हनुमान ते ॥
तब कीश ठानी देहुँ शिक्षा सबहि यों हिय दृढ गुनी ॥
करि हंक शोर उतंक भाषी शीख जो तिहुँपुर सुनो ॥ १० ॥
जो सुनहिं वर्णहिं रामचरित सदाहिं संयुत नेमसों ॥
सब भाँति सो दुहुँ लोकमें सानंद रैहैं क्षेमसों ॥
यह गाथ विशद त्रिलोक पूजित वेद पंचम जानिये ॥
इक एक वर्ण अनंत पातक प्रबल घातक मानिये ॥ ११ ॥
शुचि नेम उत्सव यज्ञ दान सु मान साज सजायकै ॥
श्रद्धा सनेह प्रतीति नीति समेत हिय हुलसायकै ॥
बक्तासु पुस्तक पूजि सविधि समस्त सुनहिं सुनायहैं ॥
यह राम चरित प्रभावते अभिलाष सकल पुजाय हैं ॥ १२ ॥
प्रति दिवस वा प्रति मास वा प्रति वर्ष प्रीति प्रतीतसे ॥

बांचैं सुनावैं सुनहिं वा पुस्तकहि पूजैं रीतिसे ॥
सामर्थ्यहीन न कराहिं कछु तिहि पै कृपा सिय रामकी ॥
रहैं सदा रसिकेश रक्षा राखि हौ शुभ कामकी ॥ १३ ॥
अभिमान लोभ कुतर्क निंदा मलिनता कछु राखिहै ॥
शुभकथा मध्य विवाद मिथ्यालाप जगकृत भाखिहै ॥
हरि रूप रामचरित्र दूजैं गाथ सम ठहरायहै ॥
सो पाय है बहु दण्ड दोऊ लोक तासु नशाय है ॥ १४ ॥
सुनि पवनसुतकी शीख तिहुँ पुर पुरुष तिय सब शिरधरी ॥
युत रीति होत चरित्र दश दिशि सकल सुख बसुधा भरी ॥
रघुवीर लखि कपि वीरकी वर प्रीति नीति बखानहीं ॥
हनुमंत नित प्रभु सेवहीं मुद सुनत गुण गण गानहीं ॥ १५ ॥
वर विविध सुर मुनि संहिता विरची अनूप अनेक जो ॥
जिन माहिं सीताराम लीला अमित लेख विवेक सो ॥
हिंडोल रासादिक विहार प्रच्छन्न और प्रकाशके ॥
वर्णन किये ऋषि देव त्यों हनुमंत सहित हुलासके ॥ १६ ॥
ते सकल सीताराम यश वर शुद्ध सत्य प्रमानके ॥
ध्रुव भूति प्रगट सुवर्त्तमान भविष्य दृढ़ सब भानके ॥
रघुवीर करि करि श्रवण परम प्रमोद हिय हुलसावहीं ॥
इमि अवधपुर सियनाथ विलसत नित्य जन गुण गावहीं १७॥

इति श्रीरा०र०वि०वि०श्रीरामचरित्रप्रभाव वर्णनोनाम चतुर्दशो विभागः १४

दोहा–तिय सुत बन्धु समेत बहु, प्रजा समस्त समाज ॥
एक दिवस बैठे सभा, प्रमुदित श्रीरघुराज ॥ १ ॥
ताक्षण सबहि सुनायकै, वचन कहे रघुलाल ॥
हम विधिसे कछु प्रण कियो, सो आयो अब काल ॥ २ ॥
याते हम सुरलोक ह्वै, आवैं अतिहि उताल ॥
रहियो सब सानंद अति, हैं कुश लव भूपाल ॥ ३ ॥
सुनि सबहीं अकुलायकै, कहे दीन है बैन ॥
पुरवासी चर अचर अब, प्रभुबिन छिनहु रहैं न ॥ ४ ॥
तब रघुवर बहु भाँति ते, समुझाये सबकाहिं ॥

सप्तदिवस लग कोउपै, कैसहु मानत नाहिं ॥ ५ ॥

प्र० वा० ॥ उ० कां० ॥ स० ॥ १०७ ॥ श्लोक ॥

ततः सर्वाः प्रकृतयो रामं वचनमब्रुवन् ॥
गच्छंतमनुगच्छामो यत्र राम गमिष्यसि ॥ १ ॥

दोहा—पुनि बोले सब नाथ है, काह देवपुरमाहिं ॥
जाहि विलोकन हेतु प्रभु, अवध नगर ते जाहिं ॥ ६ ॥
अवध धाम आधीन हैं, सकल तिहूं पुरधाम ॥
पुनि कौशलपुरतें अधिक, कोउ न सुखद ललाम ॥ ७ ॥
ब्रह्मादिक सुर सकल ते, चाहत अवध निवास ॥
इत कोटिन वैकुंठ सम, सेवक सदन विलास ॥ ८ ॥

प्र० पद्मपुराणे श्लोक ॥

सरयूतमसयोर्मध्ये धवलग्रामवसुंधरे ॥
अमरामरणमिच्छन्ति का कथा इतरेजनाः ॥ २ ॥

चौ०-सुनि तिनके वर वचन प्रमाने ❀ श्रीरघुवीर अधिक हरषाने ॥
बोले सकल सत्य सब भाषी ❀ ऐसीही हौं हिय गुनि राषी ॥ ९ ॥
पै हम वचन विधातहि दीना ❀ सो प्रण पूरण चाहिय कीना ॥
याते जाय देवपुर हेरी ❀ आवैं अवध माहिं द्रुत फेरी १० ॥
तब सब भाषी हमहुं सिधारैं ❀ कैसो है सुरलोक निहारैं ॥
पुनि प्रभु संग अवध माधि ऐहैं ❀ लिहि नित दरश अनंदित रैहैं ११
एवमस्तु बोले रघुवीरा ❀ हरषित भये सबै जन भीरा ॥
यह सु सप्तदिन मधि बहु शोरा ❀ फैलि भयो तिहुंपुर चहुंओरा १२
सुनि सुनि जन जित तित तेधाये ❀ अति उताल कौशलपुर आये ॥
कपिपति जाम्बवंत लंकेशा ❀ पहुंचे सदल साजि शुभ वेशा १३
अंगदहि राज सुग्रीवा ❀ आये अवध अतुल बलसीवा ॥
तिहुँ नृप सदल राम पद परशे ❀ सादर उचित परस्पर दरशे ॥ १४
विनय करी सबही नामि माथा ❀ हम समस्त गमनैं प्रभु साथा ॥
पुनि श्रीरामधीर बहु दीनी ❀ यथायोग पुनि आयसु कीनी १५
मम विभीषण प्रतिइमि भाषी ❀ भूपहि नीति उचित सब साषी ॥
तुम सखा लंक महिपाला ❀ पुनि मम यह वरदान विशाला १६

दोहा—जब लग रवि शशि भूमि जग, मम चरित्र संसार ॥
अचल विभीषण राज तब, तौ लग लंक मझार ॥ १७ ॥

अमर अजर धन धान्य युत, रहौ सदा लंकेश ॥
गुण बल विद्या देवगति, लहि मम भक्ति सुदेश ॥ १८॥
रहौ जाय लंकहि सदा, पालौ प्रजहि सुनीत ॥
सदानिरंतर परस्पर, है वर मम तव प्रीत ॥ १९ ॥
यदपि वेगि सुरपुर निरखि, ऐहौ अवध मझार ॥
तदपि तुमहिं बिन लंक मधि, होय नहीं निस्तार ॥ २० ॥
यों कहि वेगहि राम पुनि, हनुमंतहि करि प्रीति ॥
बोले धीर धराय बहु, सहित रीत नृप नीति ॥ २१ ॥
मम चरित्र नित श्रवणको, नेम कियो भुवि माहिं ॥
सोई प्रणको पालिहो, है कपि उचित सदाहिं ॥ २२ ॥
पुनि मम वर तुव हेतु यह, चिरजीवी वर वीर ॥
जब लग जग मो चरित है, तब लग सुनहु सुधीर ॥२३॥
रसिकविहारी भक्त बहु, पालौ सहित सनेह ॥
सदा रहौ सानँद अवध, मम आज्ञा है येह ॥ २४ ॥
यौं कहि हनुमंतहि तुरत, जाम्बवंत प्रति राम ॥
बोले अतिहि उताल वर, मृदुल बैन अभिराम ॥ २५॥
द्विविद मयंद समेत वर, तुमहिं दियो हम तात ॥
रहौ सु द्वापर अंतलग, चिरजीवी कुशलात ॥ २६ ॥
याते तिहुँ तुम लंकपति, अरु हनुमत ये पांच ॥
मम आज्ञा पालौ मुदित, जीय करौ नहिं कांच ॥ २७॥
कोउ न उत्तर देहु कछु, करौ कही हम जोय ॥
मम आज्ञा पालौ सदा, सबहीको भल होय ॥ २८ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ उ० कां० स० १०८ ॥

तैरेवमुक्तः काकुत्स्थो बाढमित्यब्रवीत्स्मयन् ॥
विभीषणमथोवाच राक्षसेन्द्रं महायशाः ॥ ३ ॥
यावत्प्रजा धरिष्यन्ति तावत्त्वं वै विभीषण ॥
राक्षसेन्द्रमहावीर्य लंकास्थः स्वंधरिष्यासि ॥ ४ ॥
यावच्चंद्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी ॥
यावच्च मत्कथा लोके तावद्राज्यं तवास्त्विह ॥ ५ ॥
तमेवमुक्त्वा काकुत्स्थो हनूमंतमथाब्रवीत् ॥
जीवितेकृतबुद्धिस्त्वं मा प्रतिज्ञां वृथा कृथाः ॥ ६ ॥

...थाः प्रचरिष्यन्ति यावल्लोके हरीश्वर ॥
तावद्रमस्व सुप्रीतो मद्वाक्यमनुपालयन् ॥ ७ ॥
जांबवंतं तथोक्त्वा तु वृद्धं ब्रह्मसुतं तदा ॥
मैंदं च द्विविदं चैव पंच जांबवता सह ॥
यावत्कलिश्च संप्राप्तस्तावज्जीवत सर्वदा ॥ ८ ॥

दोहा—पुनि हम सुरपुर विचरिकै, आवहिं अवध तुरंत ॥
तब सबही मुद मिलहिंगे, लीला करैं अनंत ॥ २९ ॥
सुनि प्रभु आयसु पांचहू, शिर धरि कियो प्रणाम ॥
दीनो राम रजाय जिमि, तिमि कीनों सब काम ॥ ३० ॥
पुत्र वधू युत पुत्रवर, तासु समाज समेत ॥
भेजे प्रभु जन पालहित, निज निज गये निकेत ॥ ३१ ॥

चौ०-इहि विधि सकल यथोचित काजा ❀ परमानंद किये रघुराजा ॥
पुनि सुरपुर विहार हित साजे ❀ सब चर अचर संग लगि भ्राजे ३२
नर नारी पुर परिजन भूरी ❀ कीश ऋच्छ सेना बहु रूरी ॥
...नेश्वर पशु पक्षी बहु जीवा ❀ कीट पतंग समस्त अतीवा ॥ ३३ ॥
...ाक्षण जे चर अचर अपारा ❀ भूरिभाग्य हे अवध मझारा ॥
... सब शुद्धभक्ति अनुरागे ❀ परमानंद राम सँग लागे ॥ ३४ ॥
...म वाम दिशि शोभित रामा ❀ दक्षिण दिशि वर रमा ललामा ॥
...नु शर आदि सु आयुध जेते ❀ पुरुष रूप आगे सब तेते ॥ ३५ ॥
...ायत्रीसह द्विज वपु वेदा ❀ वषट्कार अरु प्रणव अखेदा ॥
...ग्निहोत्र युत रघुवर संगा ❀ विपुल विप्र मुनि संत सुढंगा ॥ ३६ ॥
...रत शत्रुहन तियन समेता ❀ दासी दास सचेत अचेता ॥
...ी सेवक सखा अपारा ❀ ऊँच नीच सब सह परिवारा ॥ ३७ ॥
...र अलक्ष जीव सँग लागे ❀ ताक्षण भये समस्त सुभागे ॥
...मानंद मगन हुलसावैं ❀ राम संग सुरपुर लखि आवैं ३८ ॥
... सबही संयुत श्रीरामा ❀ गमने अवलोकन सुरधामा ॥
... दिशि विप्र वेद धुनि छाई ❀ जैजै राम गिरा सरसाई ॥ ३९ ॥
...धपुरी सरयू शुभ सरिता ❀ तिहूँ लोक जन पावन करिता ॥
...म घाट सुभग सो पाना ❀ राजमहलते कोश प्रमाना ॥ ४० ॥

प्र०। वा० ॥ उ० ॥ कां० ॥ स० ॥ १०९ ॥ श्लोक।

रामस्य दक्षिणे पार्श्वे पद्मा श्रीःसमुपाश्रिता ॥

सर्व्येपिच महादेवी व्यवसायस्तथाग्रतः ॥ ९ ॥
शरानानाविधाश्चापि धनुरायत्तमुत्तमम् ॥
तथायुधाश्चतेसर्वेययुः पुरुषविग्रहाः ॥ १० ॥
वेदा ब्राह्मणरूपेण गायत्री सर्वरक्षिणी ॥
ॐकारोऽथवषट्कारः सर्वेराममनुव्रताः ॥ ११ ॥
तथातामनुगच्छंति ह्यंतःपुरचराःस्त्रियः ॥
सवृद्धबालदासीकाः सवर्षवरकिंकराः ॥ १२ ॥
सांतःपुरश्चभरतः शत्रुघ्नसहितो ययौ ॥
रामं गतमुपागम्य साग्निहोत्रमनुव्रतः ॥ १३ ॥
तेच सर्वे महात्मानः साग्निहोत्राः समागताः ॥
सपुत्रदाराः काकुत्स्थमनुजग्मुर्महामतिम् ॥ १४ ॥
मंत्रिणो भृत्यवर्गाश्च सपुत्रपशुबांधवाः ॥
राघवस्यानुगाः सर्वे हृष्टा विगतकल्मषाः ॥ १५ ॥
ऋक्षवानररक्षांसि जनाश्च पुरवासिनः ॥
आगच्छन्परया भक्त्या पृष्ठतस्तु समाहिताः ॥ १६ ॥
यानि भूतानि नगरेप्यंतर्धानं गतानि च ॥
राघवं तान्यनुययुः स्वर्गाय समुपस्थितम् ॥ १७ ॥
यानि पश्यन्ति काकुत्स्थं स्थावराणि चराणिच ॥
सर्वाणि रामगमने अनुजग्मुर्हि तान्यपि ॥ १८ ॥
नोच्छ्वसत्तु ह्ययोध्यायां सुसूक्ष्ममपि दृश्यते ॥
तिर्यग्योनिगताश्चैव सर्वे राममनुव्रताः ॥ १९ ॥
अध्यर्धयोजनं गत्वा नदीम्पश्चान्मुखाश्रिताम् ॥
शरयूं पुण्यसलिलां ददर्श रघुनंदनः ॥ २० ॥ इत्यादि ॥

चौ०—आये मुदित तहाँ रघुवीरा ❁ संग अपार चराचर भीरा
ताक्षण ब्रह्मादिक सब देवा ❁ धाये मुदित करनहित सेवा ४१
शतकोटिन विमान नभ छाये ❁ विशद विशाल अनूप सुहाये
अस्तुति करहिं देव मुनि वृन्दा ❁ नटहिं अप्सरा परम अनंदा ४
तब रघुवर सरयू करि मज्जन ❁ सजो शृँगार मुदित लखि सज
पुनि प्रभु कही चराचर जोई ❁ द्रुत स्नान करैं सब कोई ४
तब लाये विधि निकट विमाना ❁ जासु तेज शत भानु समाना
तामधि श्रीसंयुत श्रीरामा ❁ शोभित भये सबंधु ललामा

अपर चराचर सरयू न्हाई ❀ ह्वै सु दिव्य शृंगार सजा।
बैठे सकल विमानन माहीं ❀ तिनहिं देखि सुरवृन्द सिहाहीं ४
जै जै करैं देव समुदाई ❀ दुंदुभि हनैं सुमन बरसाई ॥
नभमंडल ह्वै सकल विमाना ❀ कियो सजन सुरलोक पयाना४६
निरखत जन चहुँ सुगति विचित्रा ❀ देवधाम बहु सुभग पवित्रा ॥
सुरपुर भई भीर अति भारी। चकित होत लखि लखि नर नारी४७
बैठे वर विमान पुरवासी ❀ देव सरिस अति रूप प्रकाशी ॥
पहुँचे वेगि सहित श्रीरामा ❀ यथायोग पाये सब धामा॥ ४८॥
जनकनंदिनीयुत रघुराई ❀ संग अनुज तिहुँ आनँद छाई ॥
कीनो वास उच्च वर धामा ❀ देव मुदित लहि दरश ललामा४९
ब्रह्मादिक सुर विविध अपारा ❀ युत अस्तुति किय बहु सतकारा॥
इमि रघुवर निज वचन प्रमाना ❀ लखो देवपुर सब सुखमाना५०॥

दोहा—जिते चराचर राम सँग, आये सुरपुर माहिँ ॥
ते विधि हरि हर से सकल, जिन लखि देव सिहाहिँ ५१॥
सरयू अवध प्रभाव अरु, राम कृपा फल जानि ॥
तिनहिं सराहत देव सब, सुकृत सुभाग्य बखानि ॥ ५२॥
पै जेते चर अचर सब, अवध निवासी जोय ॥
कहा अधिक आनँद इहाँ, यों भाषैं सब कोय ॥ ५३ ॥
कब चलिये पुनि अवधमें, सबही जिय उमगाय ॥
कौशलपुर सुख सासुहें, सुरपुर काहु न भाय ॥ ५४ ॥
इमि बहु भाषत पै विवश, प्रभु आज्ञा आधीन ॥
बहु सुख साज समेत पुनि, वास देवपुर कीन ॥ ५५ ॥
सीतारामहि नेह युत, नित सेवत सुरवृंद ॥ ५६ ॥
पुरजन परिजन चर अचर, विहरत सब सानंद ॥५६ ॥
देव भक्ति आधीन तहँ, रहे यदपि श्रीराम ॥
पै समाज संयुत सदा, सुमिरत अवध सुधाम ॥ ५७ ॥
इमि रघुवर सुर प्रेममें, मग्न रहे बहु काल ॥
दुष्ट दरन संकट हरन, करन भक्त प्रतिपाल ॥ ५८ ॥
पुनि सब देवन धीर दै, कहि मृदु वचन बुझाय ॥
देव लोकते मुदित ह्वै, गमन कियो रघुराय ॥ ५९ ॥
ऋतु बसंत लखि श्रीरमण, सहित समाज अ

पूरब सम सानंद द्रुत, आये अवध मझार ॥ ६० ॥
सिया बंधु तिहुँ मातु पितु, सेवक सखा समाज ॥
पुर परिजन चर अचर सब, युत आये रघुराज ॥ ६१ ॥
तिहूं लोक आनंद भो, छायो जैजै शोर ॥
रसिकविहारी सुख भरे सब अपार चहुँ ओर ॥ ६२ ॥
नितप्रति लीला होत बहु, प्रमुदित सकल समाज ॥
सुख शोभा लखि अवध पुर, अति सिहात सुरराज ॥ ६३॥
सीताराम समाज युत, परमानंद अपार ॥
सदा निरंतर अवधमें, करत अनेक विहार ॥ ६४ ॥
नित्य राम सिय अवध नित, नित्य नाम गुण रूप ॥
नित्य चरित लीला सकल, नित्य समाज अनूप ॥ ६५ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० का० ॥स० ॥१३०॥ श्लोक ॥

यावदावर्त्तते चक्रं यावती च वसुंधरा ॥
तावत्त्वमिह लोकस्य स्वामित्वमनुवर्तय ॥ २१ ॥

पुनः पद्मपुराणे ।

रामस्य नाम रूपं च लीलाधाम परात्परम् ॥
एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानंदविग्रहम् ॥ २२ ॥

पुनः॥ महारामायणे ॥

श्रीअयोध्यां परित्यज्य पदमेकं न गच्छति ॥
अशोकवाटिकायान्तु रमते सर्व दैवहि ॥ २३ ॥ इत्यादि ॥

दोहा– जे जन ज्ञाता विमल दृढ, राम भक्त मतिवंत ॥
ते यहि भेदहि जानहीं, हरि गुरु कृपा अनंत ॥ ६६ ॥
कल्प कल्पके चरित बहु, कोऊ लहै न अंत ॥
निज निज मति अनुसार कछु, वर्णत सुर मुनि संत ॥ ६७॥
पै निज निज कृत ग्रंथमें, धरत अनूपम युक्ति ॥
सो सुबुद्धिते लखिय तो, एक मिलै सत उक्ति ॥ ६८ ॥
पक्षवाद भ्रम तर्क तजि, अवलोकै सदग्रंथ ॥
अर्थ व्यंग्य ध्वनिते मिलै, सबको एकहि पंथ ॥ ६९ ॥
हेरौ पद्मपुराण मैं, अश्वमेधके अंत ॥
परम प्रमाणिक उक्ति सत, किमि राखी मतिमंत ॥ ७० ॥
[illegible] समाज श्रीरामको, वर सुरलोक विहार ॥
[illegible] आगम श्रीअवधमें, कियो युक्ति निरधार ॥ ७१ ॥

प्र० ॥ पद्मपुराणांतर्गतरामाश्वमेधे । अध्याय ६८ ॥ श्लो० ॥

राजेंद्रं सीतया साकं गच्छंतं सरितं प्रति ॥
विलोक्य मुदितं लोकाश्चिरं दर्शनलालसाः ॥ २४ ॥
अनेकराजकोटीभिः परितः परिवारिभिः ॥
जगाम स सरिच्छ्रेष्ठां पक्षिवृंदसमाकुलाम् ॥ २५ ॥
तत्र गत्वा स वैदेह्या रामः कमललोचनः ॥
प्रविवेश जलं पुण्यं वसिष्ठादिभिरन्वितः ॥ २६ ॥
अनु प्रविविशुः सर्वे राजानो जनता तथा ॥
तत्पादरजसा पूतं जलं लोकैकवंदितम् ॥ २७ ॥
परस्परं प्रसिंचंतो जलं यंत्रैर्मनोरमैः ॥
सुशोणनयनाः सर्वे हर्षं प्रापुर्मनोधिकम् ॥ २८ ॥
स रामः सीतया सार्द्धं चिरं पुण्यजलप्लुवे ॥
क्रीडित्वा जलकल्लोलैर्निरगाद्धर्मसंयुतः ॥ २९ ॥
...लवासाः सकिरीटकुंडलः केयूरशोभांबरकंकणान्वितः
...कोटिभिश्च यमुद्वहन्नृपो राजा च सर्वैरुपसंस्तुतो बभौ ...
...विधि अमित प्रमाण मय, है श्रीरामचरित्र ॥
...देह न कीजिये, गुणिये ग्रंथ पवित्र ॥ ७२ ॥
...ाह२वन३सियहरण४, शोध५युद्ध६अभिषे...
...९मख१०गुप्त११पै, राम चरित्र अनेक...
...यश कहहिं अरु, श्रवण करें ते ...
...सिय रामके, ते ...

राम रसायन ग्रंथमें, बहु ग्रंथनके अंग ॥
धरे यथोचित निरखि तहँ, जैसो जहाँ प्रसंग ॥ ८० ॥
पुनि होवै जिहि भ्रम कछू, सो भरि हीय उमंग ॥
लिखे प्रथम जे ग्रंथ वर, तिनको लखैं सुढंग ॥८१ ॥
अति प्रमाणमय पुण्यमय, पूज्य प्रतिष्ठ पवित्र ॥
हैं अपार अनवाधि अमित, अगणित रामचरित्र ॥ ८२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

होकै कोटि शेष शेष शेष प्रति कोटि शीश शीश शीश प्र...
कोटि मुख प्रगटावैंगे। प्रति मुख कोटि कोटि रसना धरावै फेरि
रसना पै कोटि भारती बसावैंगे। कलप अनंतलों निरंतर अ...
हीं जन्मलै अनंत जो अनंत गुण गावैंगे। रसिकविहारी त...
रामचंद्रजूके चरित अपारको न नेक पार पावैंगे ॥ ८३ ॥

दोहा—सीताराम चरित्र सो, कोउ लहै किमि पार ॥
वर्णत निज उद्धार हित, सुर नर मति अनुसार ...
विद्या बुद्धि विवेक को, फल है यही पवित्र ॥
कहै सुनै विरचै गुणै, सीताराम चरित्र ॥ ८...
सब सज्जन जन ते यही, विनय करौं कर ...
कृपा सदाही राखियो, चूक क्षमो जो मोरि...

सीताराम चरित यह कोई ❀ बाँचै ...
...के स्वरुचि फल पावै ❀ अंत समय ...
...नकदुलारी ❀ जै श्रीरा...
...जै ...सियाकंत ...

शयन दर्शन
https://www.facebook.com/KanakBhawanAyodhya

Dual Rear Camera

श्री सीताराम
Vivo V9
Dual Rear Camera
2021.03.02 10:21
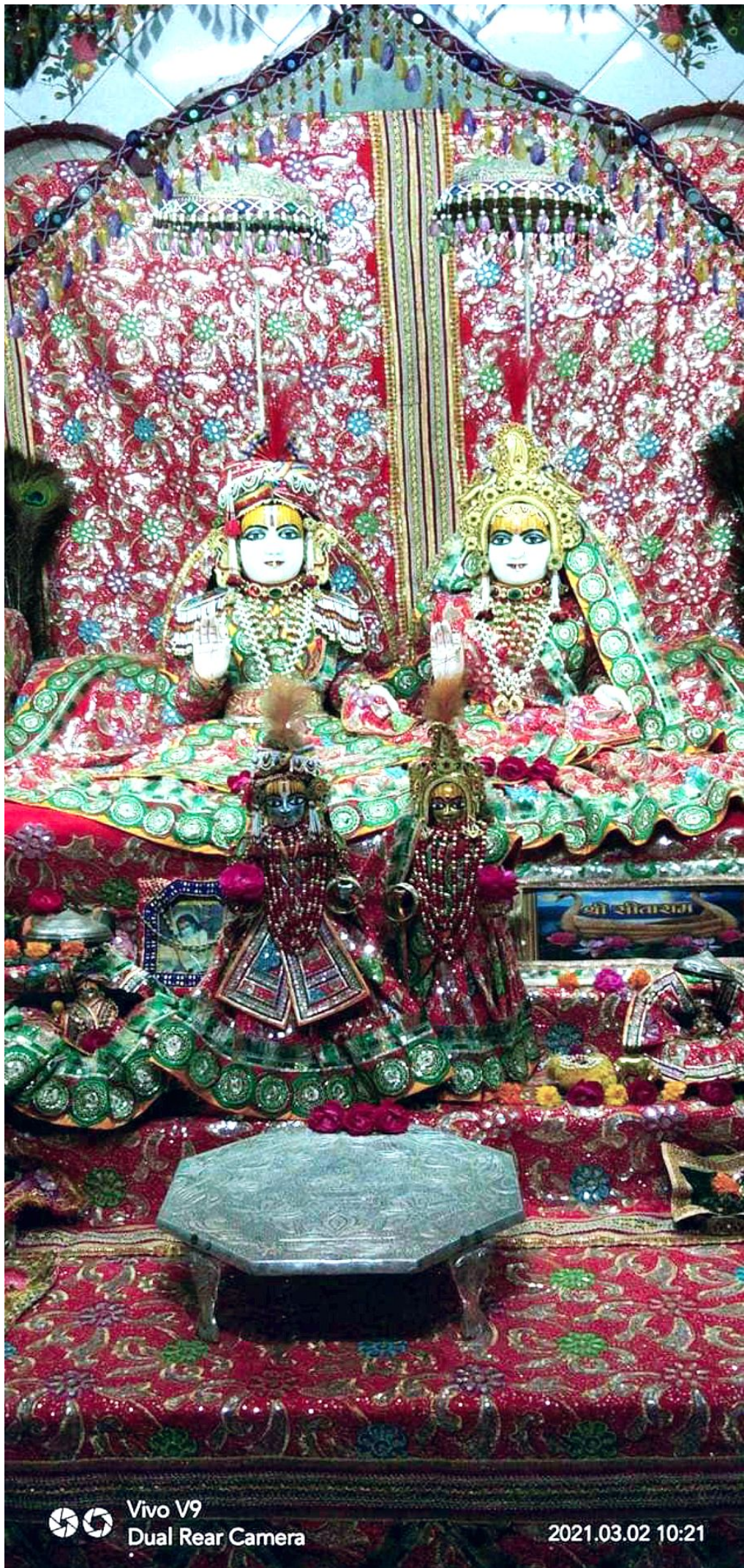
श्री सीताराम
Vivo V9
Dual Rear Camera
2021.02.28 08:37

श्री सीताराम

श्री सीताराम
Vivo V9
Dual Rear Camera
2021.03.01 09:19

श्री सीताराम
Vivo V9
Dual Rear Camera
2021.02.26 09:19

श्री सीताराम
Vivo V9
Dual Rear Camera
2021.03.03 08:21

श्री सीताराम

श्री सीताराम

श्री सीताराम

श्री सीताराम

शयन दर्शन
Pawan/02-01-2022
https://www.facebook.com/KanakBhawanAyodhya